



साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

पृष्ठ संख्या 12

पृष्ठ- 12

- अमेरिकी** संसद की प्रतिनिधि सभा में एच १बी वीजा से संबंधित एक नया विधेयक पेश किया गया है। इसके तहत न्यूनतम १३०००० डॉलर वेतन वाली नौकरियों के लिए ही ऐसा वीजा दिया जा सकता है। यह मौजूदा न्यूनतम वेतन स्तर के दो गुना से भी ज्यादा है और इसके लागू होने पर अमेरिकी कंपनियों के लिए अमेरिका में भारत सहित विदेशी कर्मचारियों को नौकरी देना मुश्किल हो जाएगा। यह पहल डोनाल्ड ट्रंप सरकार की अमेरिकियों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने की पहल का हिस्सा है। कैलिफोर्निया के सांसद जो, लोफग्रेन ने हार्ड-स्किल्ड इंटीग्रिटी एंड फेयरनेस एक्ट-२०१७ उच्च कुशल निष्ठा एवं निष्पक्षता अधिनियम
- शेष पृष्ठ 11 पर**
- 



बर्लिन की भ्रष्टाचार आकलन एवं निगरानी संस्था ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल टीआई ने भ्रष्टाचार के मामले में दुनिया के कुल १७६ देशों की सूची में भारत को ७६वें स्थान पर रखा है। टीआई की सीपीआई-२०१६ की रिपोर्ट के अनुसार न्यूजीलैंड और डेनमार्क को सबसे कम भ्रष्टाचार वाला देश बताया गया है। सर्वेक्षण में इन देशों को ६० अंक मिले हैं, जबकि सोमालिया को सबसे भ्रष्ट देश बताया गया है और उसे केवल १० अंक मिले हैं। करप्शन परसेप्शन इंडेक्स-२०१६ में भारत और चीन को भ्रष्टाचार के मामले में एक साथ ७६वें स्थान पर रखा गया है। टीआई के सर्वेक्षण में दोनों देशों ने ४०-४० अंक हासिल किये हैं। पिछले साल करप्शन परसेप्शन इंडेक्स-२०१५ की रपट में भारत ३८ अंक हासिल करके ७६वें स्थान पर था। टीआई के इंडेक्स-२०१६ के अनुसार कुल १७६ देशों में से करीब दो तिहाई देशों की भ्रष्टाचार रैंकिंग में गिरावट आई है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल करप्शन परसेप्शन इंडेक्स-२०१६ सीपीआई-२०१६ के लिए कई स्तरों पर सर्वेक्षण के बाद देशों को अंक प्रदान करता है जिसके आधार पर सर्वेक्षण में शामिल देशों में भ्रष्टाचार की स्थिति का अनुमान लगाया जाता है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के प्रमुख रामनाथ झा ने बताया कि सर्वेक्षण में शामिल देशों की संख्या बढ़ने से भारत की सीपीआई रैंकिंग में गिरावट आई है। पिछले साल इस सर्वे में १६८ देश शामिल थे, जिसमें भारत ७६वें स्थान पर था, जबकि इस साल इसमें कुल १७६ देश शामिल किये गये हैं जिसमें भारत ७६वें स्थान पर है। टीआई की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार २०१६ के इंडेक्स में भारत के स्वच्छता एवं पारदर्शिता अनुमान में दो अंकों की बढ़ोतरी हुई है, लेकिन भ्रष्टाचार रैंकिंग में यह तीन स्थान नीचे चला गया है। जानकारी के अनुसार सीपीआई-२०१६ के विभिन्न सर्वेक्षणों में भ्रष्टाचार-रोधी कार्रवाई, भ्रष्टाचार के मामलों की निगरानी की कमी, नागरिक समाज के लिए घटते स्थान संगठित एवं बड़े भ्रष्टाचार, रोजमर्रा के जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार और सरकार के प्रति लोगों के कम होते भरोसे, लोकतंत्र के फायदे और कानून की सख्ती आदि कारकों को शामिल किया गया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के



शेष पृष्ठ 11 पर

‘ये ही जीवन का सार है’

जैसा कि कहा जाता है कि मन की गति अति विचित्र है। परस्पर अत्यन्त विपरीत भावनाएं शोक, दुःख, मोह, भय एक ही काल में मानव मन में उदित हो उठते हैं परन्तु हमारा कर्तव्य है कि हम कभी अपने को दुर्बल न समझें, हमें यह जानना चाहिए कि हम सभी ईश्वर के अंश हैं, उसका ही सृजन हैं। मनुष्य में अनन्त शक्ति निहित है बस आवश्यकता है, जीवन में आई विषम परिस्थितियां स्वयं को सिद्ध करने व जीवन को उत्सव की भांति जीने की। क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है ये हम सभी समझते हैं फिर भी इस जीवन के प्रति हम इतने मोहित व आशक्त क्यों हैं। जबकि हम सभी जानते हैं कि संसार में सुख कम और दुःख अधिक हैं फिर भी ना जाने हम किन खुशी के क्षणों की खोज में अनजाने सुख की तलाश में अंधाधुन दौड़े चले जा रहे हैं। इसलिए सुखों की चाह में लिप्त व्यक्ति स्वयं की पहचान से दूर होता हुआ भौतिकवाद में जकड़ता जा रहा है। सच पूछा जाए तो इस स्थिति के लिए मनुष्य स्वयं ही उत्तरदायी है। ईश्वर ने मनुष्य को मूल्यवान जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है ताकि इस बहुमूल्य जीवन को उत्सव मानकर जिए क्योंकि चौरासी लाख योनियों में भटकने के पश्चात् हमें मनुष्य जीवन की प्राप्ति होती है, जरा सोचिए कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि....‘बड़े भाग मनुष्य तनु पावा’। फिर इस अभूतपूर्व प्राप्त जीवन का कुछ तो उद्देश्य होना ही चाहिए जैसे..... जीवन का प्रवाह निरंतर बहते हुए पानी की तरह होना चाहिए जैसे...पानी कठोर से कठोर चट्टानों से टकराता हुआ संकरी व छोटी से छोटी जगह में भी अपना स्थान बना ही लेता है। जैसे गंगा के निर्मल प्रवाह को आज तक न कोई, रोक पाया है ना रोक पायेगा। इसी प्रकार मनुष्य के मन में भी कामनाओं, इच्छाओं व भावनाओं के ज्वार भाटे निरंतर उठते रहते हैं पर दुःख इस बात का है कि विज्ञान के इस युग में असीमित सुख-सुविधाओं से युक्त साधनों के बीच हम खुशी का वास्तविक स्वरूप भूलते जा रहे हैं, जबकि खुशियों का खजाना हमारे आस-पास होता है लेकिन हमारा ध्यान उस ओर जाता ही नहीं क्योंकि आधुनिकता की ऊँची दौड़ में आज की तरूणाई दिग्भ्रमित है, इसलिए मानव जीवन के मूल्य बिखरते जा रहे हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम कभी अपने को दुर्बल न समझें, हमें यह जानना चाहिए कि हम ईश्वर के अंश हैं, उनकी सन्तान हैं। जो सर्वशक्तिमान हमें जीने की शक्ति देता है पर दुर्बलताओं को त्याग कर मनुष्य बनने की चेष्टा करनी होगी। जहाँ अन्याय, अत्याचार देखो, वहाँ उसका प्रतिकार करो अगर आज स्वार्थपरता से अन्धे होकर तुमने अन्याय का साथ दिया तो कल तुम पर अत्याचार होंगे। तब प्रतिकार करने की शक्ति तुम में नहीं होगी।

जैसे...गीता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को सत्कर्म करने चाहिए। इससे मन को सन्तोष मिलने का दृश्य फल तो मिलता ही है, लेकिन समाज को आनन्द देने का अदृश्य फल भी उसे मिलता है, पर ये सब तब ही संभव है जब मनुष्य के मन में एकाग्रता हो, स्थिरता हो। तब ही सुख शान्ति का अनुभव कर सकता है। जैसे...हमारे देश के ऋषि, मुनी, योगी और समस्त शास्त्र एक ही बात बतलाते हैं कि जीवन को उत्सव के प्रकार जीने के लिए मन को निर्मल बनाओ। मन में राग, द्वेष, ईर्ष्या, बैर-भाव, दुर्व्यासनाएं, लोभ, आशक्ति व दूसरों को सताने का भाव आदि दोष भरे पड़े हों तो उनको मन से दूर करो व शान्त अन्तःकरण वाले बनो। क्योंकि शरीर और मन पर ईश्वर का अधिकार है न कि अहंकार का। जब हम अपने वास्तविक रूप-स्वरूप को जान पायेंगे तब ही स्वयं ब्रह्म के साथ एकीकार हो पायेंगे।

तात्पर्य ये ही है कि निःस्वार्थ होकर निष्काम भाव से कर्मानुष्ठान करने से कर्मफल के साथ लिप्त नहीं होना पड़ता और पूर्व निःस्वार्थता ही समग्र बंधन को दूर कर देती है। जैसे.... गीता ने कर्म फल त्याग सिखाया है। फल का सत्त चिन्तन करने की अपेक्षा जो सत्कर्म में ही रम जाता है उसे अधिक बड़ा फल मिलता है जैसे...बच्चे जब खेलते-कूदते हैं तब उनके मन में यह विचार नहीं होता है कि इससे व्यायाम होगा या शरीर पुष्ट होगा, बस वो तो खेले का आनन्द लेते हैं, तब ही खेलते हैं। इसलिए प्रत्येक सांसारिक मानव को विवेक रूपी तलवार की धार को तेज करने के लिए साधन में सत्संग और स्वाध्याय तो है ही साथ-साथ सांसारिक आवागमन के चक्रव्यूह से निकल कर ईश्वर के धाम में प्रवेश करने के लिए श्रीमद्भगवत गीता रूपी प्रकाशपुंज व शास्त्रों के कथन पर विचार कर उनसे जुड़ना चाहिए। ‘अहिंसा परमोधर्म’ को अपनाकर चारों दिशाओं में समग्र ज्ञान व समरसता की ज्योति फैलानी चाहिए ताकि अज्ञानता के बंधनों को काटकर मानव ईश्वर सृजन रूपी जीवन को उत्सव मानकर जिए और सभी को जीने दें। ये ही जीवन का सार है क्योंकि जीवन तो आवागमन का दूसरा रूप है, इसमें विचरते हुए आप कैसे जीते हो, क्या सोचते व समझते हो, वो सकारात्मक है या नकारात्मक ये आप पर निर्भर करता है।

रश्मि अग्रवाल

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आप-अपने को निरुत्तर न बनायें बल्कि प्रत्येक प्रश्न का जवाब तर्कपूर्ण ढंग से देने की कोशिश करें। जो आपके जॉब की दृष्टिकोण से लाभकारी साबित होगा। पारिवारिक समस्याओं को लेकर कुछ मानसिक उलझने उत्पन्न होने की आशंका है।

वृष : इस सप्ताह आप यह ध्यान रखें कि विरोधी आपकी गलतियों का इन्तजार कर रहे हैं। इसलिए अपनी ओर से कोई गलती न करें। परिवार का सहयोगात्मक रवैया आपको आन्तरिक रूप से मजबूत करेगा। छात्रों को समय की पाबन्दी ही सफलता की ओर अग्रसर कर सकती है।

मिथुन : इस समय कुछ लोगों के मन में किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु या परिस्थिति से भय व्याप्त हो गया है। जब भय मन पर हावी हो जाता है, तो भविष्य बोझ लगने लगता है। अतः इस भय पर काबू पाना ही होगा। अर्थ से जुड़ी समस्याओं का समाधान होने के आसार हैं।

कर्क : कुछ लोग इस सप्ताह धार्मिक अनुष्ठान में सहयोगी के रूप में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे जिससे मानसिक व शारीरिक व्याधियों से निजात मिलेगी। नवयुवक निराश हो सकते हैं, परन्तु निराश न होकर बल्कि आगे की रणनीति को दिशा देने का प्रयास करें।

सिंह : इस सप्ताह आप-अपने उपर क्रोध को हावी न होने दें अन्यथा आपके सारे प्रयास विफल हो सकते हैं। किसी नये व्यक्ति से मिलने के पूर्व अपने-आपको दिमागी रूप से मजबूत कर लें। आर्थिक लेने-देने से आपको फायदा हो सकता है।

कन्या : इस सप्ताह कुछ लोग पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने में अपना समय बर्बाद करेंगे। यह ध्यान रखना होगा कि समय किसी का इन्तजार नहीं करता है। जिसने समय का बेहतर ढंग से उपयोग कर लिए उसे कभी पीछे मुड़कर देखने का समय नहीं मिलता।

तुला : इस सप्ताह परिवार के बच्चों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा कोई छोटी-मोटी चोट लगने की आशंका है जिससे पूरे परिवार में तनाव पूर्ण माहौल रहेगा। प्रतियोगी छात्र अपना समय दूसरों के समस्याओं में न गवायें अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोग राजनैतिक रूप से काफी व्यस्त और सक्रिय रहेंगे जिसके दूरगामी परिणाम लाभप्रद हो सकते हैं। परिवार में सुखद वातावरण बना रहेगा जिससे लोग आपस में सहभागिता का अनुभव करेंगे। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों को कार्यों में समझौते करने की स्थिति उत्पन्न होगी लेकिन उस पर बिना सोंचे शीघ्र अमल न करें। छात्रों का मन विचलित हो सकता है, अतः दिल की बातें जुबान पर लाना ही हितकर रहेगा। धन के मामलों में सावधानी अपेक्षित है।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों पर कार्य करने के लिए दबाव बनाया जायेगा, जिसको लेकर आप असंमजस की स्थिति में रह सकते हैं। निज सम्बन्धों में मधुरता आयेगी। परिवार की ओर से सहयोग मिल सकता है। आप-अपने पड़ोसी से मधुरतम रिश्ते बनायें रखें इसी में लाभ है।

कुम्भ : इस सप्ताह निजी रिश्तों को निभाने में काफी भागदौड़ करनी पड़ सकती है। हर सुझाव पर आप पूरी उर्जा के साथ सुधार करने का प्रयास करेंगे जिससे आपके आत्म-विश्वास में वृद्धि आयेगी। आपका यही गुण सफलता का कारक साबित होगा।

मीन : इस सप्ताह आपका मन कुछ रचनात्मक कार्यों को करने के लिए व्याकुल रहेगा। इसके लिए किसी प्रकार के संघर्ष या तैयारी की आवश्यकता नहीं है। अपितु केवल अपना आत्मबल और उत्साह जगाये रखने की आवश्यकता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।

वेद्यं पवित्रमोडकार ऋक्साम यजुरेव च॥

इस सम्पूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण करने वाला एवं कर्मों के फल को देने वाला, पिता, माता, पितामह, जानने योग्य, पवित्र ओडकार तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ। ॥१७॥

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।

प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्॥

प्राप्त होने योग्य परम धाम, भरण-पोषण करने वाला, सबका स्वामी, शुभाशुभ का देखने वाला, सबका वासस्थान, शरण लेने योग्य, प्रत्युपकार न चाहकर हित करने वाला, सबकी उत्पत्ति-प्रलय का हेतु, स्थिति का आधार, निधान और अविनाशी कारण भी मैं ही हूँ। ॥१८॥

तपाम्यमहं वर्षं निगृह्यमुत्सृजामि च।

अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन॥

मैं ही सूर्य रूप से तपता हूँ, वर्षा का आकर्षण करता हूँ और उसे बरसाता हूँ। हे अर्जुन! मैं ही अमृत और मृत्यु हूँ और सत्-असत् भी मैं ही हूँ। ॥१९॥

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्टा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।

ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥

तीनों वेदों में विधान किये हुए सकाम कर्मों को करने वाले, सोमरस को पीने वाले, पापरहित पुरुष मुझ को यज्ञों के द्वारा पूजकर स्वर्ग की प्राप्ति चाहते हैं, वे पुरुष अपने पुण्यों के फलरूप स्वर्गलोक को प्राप्त होकर स्वर्ग में दिव्य देवताओं के भोगों को भोगते हैं। ॥२०॥

पाक कार्रवाई करे, नौटंकी नहीं

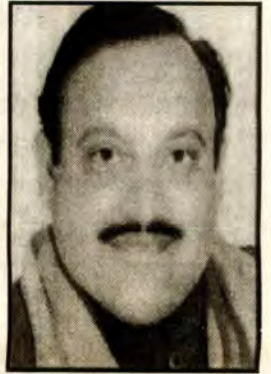


मुंबई हमलों के साजिशकर्ता, जमात-उद-दावा के प्रमुख हाफिज सईद को पाकिस्तान में नजरबंद कर लिया गया है। सईद के साथ-साथ अब्दुल्ला उबैद, जफर इकबाल, अब्दुल रहमान आबिद और काजी काशिफ नियाजी भी नजरबंदी में हैं। इन पांचों पर और जमात उद दावा व उसके सहयोगी संगठन फलाह-ए-इंसानियत फाउंडेशन पर पाकिस्तानी सरकार एंटी टेरेरिज्म एक्ट १९६७ की धारा ११, ११ ईईई के तहत पिछले छह महीनों से निगरानी रख रही थी और आखिरकार सोमवार को भारी संख्या में पुलिस बल ने कुदसिया मस्जिद को घेर कर हाफिज सईद व उनके चार साथियों को नजरबंद कर लिया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने मुंबई हमलों के बाद जमात-उद-दावा पर प्रतिबंध लगाते हुए उसे आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया था। पाकिस्तानी गृहमंत्रालय का कहना है कि इसके बाद से ही हाफिज सईद पर नजर रखी जा रही थी और ताजा घटनाक्रम इसका ही परिणाम है। वर्ष २०१४ में अमरीका ने भी इस संगठन को आतंकवादी संगठनों की सूची में शामिल करते हुए उस पर वित्तीय प्रतिबंध लगा दिया था। अमरीका ने हाफिज सईद की जानकारी देने के लिए एक करोड़ डॉलर के इनाम की भी पेशकश की थी। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने जनवरी २०१५ में घोषणा की थी कि जमात-उद-दावा सहित इन सभी आतंकवादी संगठनों की

सीज किया गया संयुक्त राष्ट्र ने हुआ है। तब दावा के प्रवक्ता ने अमरीका के दबाव खुश करने के लिए जा रहे हैं और अब उद-दावा के प्रवक्ता का यही कहना है कि पाकिस्तान सरकार पर अमरीका की ओर से दबाव था कि वो सईद के खिलाफ कार्रवाई करे वरना उसे आर्थिक प्रतिबंध डोलना होगा और पाकिस्तान सरकार इसके आगे झुक गई। भारत यह सोचकर प्रसन्न हो सकता है कि अमरीका भारत को खुश करने के लिए काम कर रहा है। मोदी सरकार इस उपलब्धि के लिए अपनी पीठ थपथपा सकती है। लेकिन हमें यह याद कर लेना चाहिए कि २००२ में भारतीय संसद पर हमले के बाद मुशरफ सरकार ने सईद को महीनों नजरबंद किया था। मुंबई हमलों के बाद २००८ में भी उसे नजरबंद किया गया, लेकिन २००६ में लाहौर हाईकोर्ट ने उसकी रिहाई के आदेश दे दिए क्योंकि पाकिस्तानी सरकार उसके खिलाफ कोई सबूत पेश नहीं कर पाई थी। अब भी अगर जमात-उद-दावा पर प्रतिबंध लगता है तो बजाए दूसरा संगठन खड़ा करने के हाफिज सईद और उसके साथ कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस बात की संभावनाएं काफी क्षीण हैं कि हाफिज सईद को पाकिस्तान किसी तरह से दंडित कर पाएगा या उसकी कारगुजारियों पर अंकुश लगेगा। मुंबई हमलों के बाद भी भारत के खिलाफ आग उगलने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी। अभी थोड़े दिनों पहले ही उसने शिमला समझौते की समीक्षा करने के लिए सरकार पर दबाव बनाने हेतु इस्लामाबाद तक रैली की योजना बनाई थी। कश्मीर में अस्थिरता फैलाने की सारी कोशिशें वह करता है और लगातार भारत विरोधी बयान देता है। यह सब वह पाकिस्तान में रहते हुए करता है और अमरीका इससे भली-भांति वाकिफ है। प्रतिबंध या नजरबंदी हाफिज सईद जैसी बीमारियों का इलाज नहीं है, यह बात पाकिस्तान भी जानता है और अमरीका भी। भारत भी इस बात को समझे और यह मुगलता न पाले कि ट्रंप के आते ही आतंकवाद छूमंतर हो जाएगा। ओसामा बिन लादेन, हाफिज सईद से बड़ा आतंकवादी था। अमरीका ने उसे पाकिस्तान में घुस कर ही मारने का दावा किया है। लेकिन क्या लादेन की मौत से आतंकवादी डर गए और अमरीका सहित पूरी दुनिया आतंकवाद से मुक्त हो गई। दरअसल आतंकवाद लादेन या सईद या बगदादी जैसे मुखौटों में दुनिया को दिखाई देता है, और इसका असली चेहरा सामने आ ही नहीं पाता है। हम एकबारगी मान भी लें कि भारत से मित्रता की खातिर अमरीका ने पाकिस्तान पर दबाव बनाया है, लेकिन यह मित्रता अभी क्यों निभाई जा रही है, यह विचार भी अवश्य करना चाहिए। पाकिस्तान को आंखे तरेरने के बदले में डोनाल्ड ट्रंप की भारत से अवश्य कुछ अपेक्षाएं होंगी। जब वे अमरीका फर्स्ट का नारा देते हैं, तो अपने ही हितों को आगे रखेंगे और अगर दूसरे का कुछ भला करेंगे तो भी उसमें जरूर कोई स्वार्थ होगा। हाफिज सईद को नजरबंद कर पाकिस्तान ने एक बहुत ही छोटा कदम उठाया है, जबकि आतंकवाद से लड़ाई के लिए लंबा सफर तय करना होगा। देखना है कि पाकिस्तान कितने दूर चल पाता है और अमरीका कब तक उसका मार्ग प्रशस्त करता है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

नहीं पूरी हुई आशा



वैसे तो केन्द्रीय सरकार के बजट को सदा ही कमजोर व निर्धन वर्ग की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, पर इस बार ऐसी कुछ विशेष स्थितियां हैं जिनके कारण यह जरूरत और भी बढ़ गई है। यह विशेष स्थितियां मुख्य रूप से ८ नवंबर को घोषित विमुद्रीकरण के कारण उत्पन्न हुई हैं जिसका प्रतिकूल असर आज भी बहुत से लोगों पर देखा जा सकता है। ऐसे लोगों की संख्या करोड़ों में है जिन्हें कम या अधिक, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नोटबंदी के प्रतिकूल असर को झेलना पड़ा है, जिनकी आजीविका व आय पर सरकार के इस कदम का प्रतिकूल असर पड़ा है। इसमें विशेषकर मजदूरों, प्रवासी मजदूरों, किसानों, छोटे स्तर पर अपना कार्य करने वाले दस्तकारों व छोटे उद्यमियों की स्थिति अधिक चिंताजनक है और उन्हें तुरंत राहत देने की जरूरत है। नोटबंदी के समय लोगों को पहले तो कहा गया कि किसी बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्हें थोड़े से दिन के लिए थोड़ा सा कष्ट सहना पड़ेगा। थोड़े से दिन बीतने पर लोगों ने देखा कि नोटबंदी से जुड़े उनके कष्ट कम नहीं हो रहे हैं अपितु बढ़ रहे हैं और कोई बड़ा उद्देश्य प्राप्त होता हुआ भी नजर नहीं आ रहा है। इस समय उन्हें दिलासा देने के लिए प्रधानमंत्री ने कहा कि आप ५० दिन का समय मुझे दे दीजिए तब तक सब ठीक हो जाएगा। ५० दिन का समय भी गुजर गया हुआ। कुछ मामलों में हुए पर कई संदर्भों में वर्गों के कष्ट बने रहे। उपलब्धि इस समय इस समय प्रधानमंत्री ने किए तो सबको उम्मीद

राहत की बात आने वाली है, पर इस संदेश से भी कोई महत्वपूर्ण राहत की दिलासा नहीं मिल सकी। कुछ अच्छी योजनाओं की बात जरूर हुई पर यह तथ्य सामने आया कि यह तो काफी पहले से बने कानून के अंतर्गत पहले ही उपलब्ध हो जानी चाहिए थीं। अब अगला इंतजार लोगों को यह था कि केन्द्रीय सरकार के बजट से कुछ बड़ी राहत मिले जिससे उनकी बिखरी हुई आजीविका व अर्थव्यवस्था फिर से व्यवस्थित हो सके। बजट में यह भरपूर प्रयास करना चाहिए था कि लोगों की यह उम्मीद इस बार पूरी हो सके और इतने इंतजार के बाद उन्हें महत्वपूर्ण राहत मिल सके। बहुत से ऐसे मजदूर हैं जिन्हें नोटबंदी के बाद बेरोजगारी झेलनी पड़ी है, जबकि बहुत से ऐसे मजदूर हैं जिनकी आय कम हो गई है। इन बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलना बहुत जरूरी है। बहुत से छोटे स्तर के उद्यमियों का कारोबार बंद पड़ा है जिसके कारण उनके मजदूर भी बेरोजगार हैं। कुछ मजदूर शहरों से गांव लौट गए हैं। वे इंतजार कर रहे हैं कि सब स्थितियां अनुकूल बने व वे अपने रोजगार में लौट सकें। कुछ मजदूरों को उद्यमियों ने कह दिया है कि जब तक हालत सुधर नहीं जाते हैं तब तक के लिए गांव चले जाओ। पर गांव में भी तो रोजगार नहीं मिल रहा है जिससे कि इन लोगों की समस्याएं बहुत बढ़ गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की ओर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत थी। कहां तो किसानों की आय बहुत बढ़ाने की बात पिछले बजट में कही गई थी और कहां तो नोटबंदी के कारण उनकी आजीविका को कई स्तरों पर संकटग्रस्त कर दिया गया। कई किसानों को अपनी उपज का सही दाम इस कारण नहीं मिल पाया तो कई किसानों की बुवाई भली-भांति नहीं हो सकी या उसमें देर हो गई। सहकारी समितियों, ग्रामीण बैंकों की समस्याएं भी बढ़ गई हैं जबकि जो स्वयं सहायता समूह पहले से भली-भांति चल रहे थे उन्हें भी नोटबंदी के कारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। यहां तक कि निर्धन वर्ग से पेंशन प्राप्त करने में भी बहुत कठिनाई जा रही है। कई तरह की राहत ग्रामीण निर्धन परिवारों व किसान परिवारों को देने के लिए यह अनुकूल समय है। बहुत समय से निर्धन वृद्ध लोगों की पेंशन, विधवा पेंशन व विकलांग लोगों को पेंशन बढ़ाने का मांग उठती रही है, इसमें अब देर नहीं होनी चाहिए कि साथ में यह पेंशन सभी जरूरतमंदों तक पहुंचनी चाहिए। मनरेगा की स्थिति सुधारने की बहुत जरूरत है। इस समय गांवों में रोजगार की जरूरत बढ़ गई है। मातृत्व सहायता में वृद्धि के अनुकूल बजट बढ़ाना जरूरी है। बच्चों के पोषण व शिक्षा के बजट में वृद्धि बहुत आवश्यक है। शिक्षा व स्वास्थ्य में बजट वृद्धि की मांग बहुत समय से उठ रही है। विशेषकर आंगनवाड़ी, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बजट बढ़ाना जरूरी है। सोशल सेक्टर हो या सामाजिक क्षेत्र की कल्याणकारी योजनाओं के बजट को बढ़ाने के साथ आय व संपत्ति की विषमता को कम करने के लिए व्यापक कदमों की भी जरूरत है। देश के कमजोर व जरूरतमंद वर्गों की इस बिगड़ती स्थिति के बीच केन्द्रीय बजट की यह जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई थी कि वह जरूरतमंदों को राहत दे। इस विशेष जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए वर्ष २०१७-१८ का बजट सफल नहीं हो सका है। यह बजट काफी हद तक किसी सामान्य वर्ष के बजट की तरह ही है। इस बार जरूरत थी कि नोटबंदी के बहुत दुष्परिणाम झेलने वाले मजदूरों और किसानों व अन्य जरूरतमंद लोगों को बड़ी राहत दी जाती। किसानों को बहुत उम्मीद थी कि तरह-तरह की विकट स्थितियों के बीच में उन्हें या तो कर्ज से महत्वपूर्ण छूट मिलेगी या अन्य कोई बड़ी राहत मिलेगी पर ऐसा नहीं हुआ। बजट में कोई ऐसी बात भी नहीं है जिससे अर्थव्यवस्था में ऐसा बड़ा मोड़ आने का संकेत मिले। किसी बड़ी व नयी सोच को आगे न लाने के कारण यह बजट पुरानी सीमाओं में ही बंधा रह गया और आज के समय की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने में समर्थ नहीं हो सका और विशेषकर सबसे जरूरतमंद लोगों की उम्मीद पर खरा नहीं उतर सका।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

व्यवहार और पर्यावरण

~~प्रो.~~ प्रो. पूनम सिंह

हम भौतिक पदार्थों तथा सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों से घिरे एक संसार में रहते हैं। हमारी सामाजिक अंतः क्रियाएँ केवल व्यक्तियों पर नहीं निर्भर करती वरन उस पर्यावरण अथवा संदर्भ जिसमें वह घटित होते हैं, पर निर्भर करती हैं। हम जिस परिवेश में रहते हैं अथवा कार्य करते हैं वह हमारे विचारों, भावनाओं को तथा व्यवहारों को प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण एक सामान्य शब्द है। जिसके अंतर्गत भौतिक पदार्थ तथा सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश आता है। पर्यावरण का मानव जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। पोषक, स्वास्थ्यवर्धक एवं साथ-साथ हानिकारक प्रभाव भी पड़ता है। पर्यावरण के कारक अनेक हैं। हम केवल उन चार प्रतिबलों पर प्रकाश डालेंगे जिनसे गंभीर समस्याएँ पैदा हो रही हैं। ये हैं—

१. वायु प्रदूषण २. ध्वनि प्रदूषण
३. भीड़ ४. प्राकृतिक एवं मानव
निर्मित आपदाएँ।

ऋणात्मक प्रभाव वायु प्रदूषण

वाहनों एवं कारखानों से निकलने वाले धुँए में कई हानिकारक एवं विषैली गैसों जैसे—कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड तथा सल्फर डाइऑक्साइड। मस्तिष्क, हृदय तथा दूसरे अंगों को वायु से प्राप्त मात्रा में ऑक्सीजन ग्रहण करने से रोकते हैं। इससे स्वास्थ्य संबंधी कई गंभीर समस्याएँ पैदा होती हैं। वायु प्रदूषण से दृष्टिगम्यता में कमी, आँखों में जलन, सिरदर्द, थकान, अनिद्रा तथा श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ पैदा होती हैं।

धूलकणों तथा विषाक्त गैसों से प्रदूषित वायु की गंध भी मानव जीवन एवं व्यवहार को प्रभावित करती है। सामान्यतः दुर्गन्ध ऋणात्मक भावना पैदा करती है। जबकि सुगंध सकारात्मक संवाद तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देती है। प्रदूषित वायु मनुष्यों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ही नहीं वरन् मानव व्यवहार पर ऋणात्मक प्रभाव डालती है। हम अक्सर देखते हैं कि ठंडे मौसम

की तुलना में गर्म तथा आर्द्र मौसम में लोग अपेक्षाकृत अधिक चिड़चिड़े और आक्रामक हो जाते हैं।

ध्वनि प्रदूषण : अवांछित ध्वनि मानव जाति पर ऋणात्मक प्रभाव डालती है। औद्योगिक एवं तकनीकी विकास के फलस्वरूप ध्वनि प्रदूषण के स्तर में काफी वृद्धि हुई है। ध्वनि प्रदूषण का प्रतिकूल, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इसके प्रभाव से उच्च स्तर का उद्वेलन प्रतिबल, ध्यान में अवरोध, सीखने की क्षमता में कमी और सामान्य निष्पादन में गिरावट आ सकती है।

वे लोग जो उच्च स्तर के कोलाहल के परिवेश में रहते हैं उन्हें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक संसाधनों का अधिक उपयोग करना पड़ता है। वे जल्दी थक भी जाते हैं क्योंकि उन्हें अधिक ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। यह भी पाया गया कि अति व्यस्त हवाई अड्डे से आने वाली ध्वनि के कारण वयस्कों में विस्मरण, सुनने की क्षमता में कमी, अतिरिक्त दबाव और जानलेवा आघात भी होते हैं। ध्वनि के ऋणात्मक अनुक्रिया का प्रमुख कारण पहले से उसकी जानकारी का न होना है। जब व्यक्ति ध्वनि से अनुकूलन पर होता है और जब ध्वनि पर नियंत्रण महसूस करता है तब कोलाहल का नकारात्मक प्रभाव कुछ कम हो जाता है।

भीड़ की अनुभूति : भीड़ की अनुभूति तब होती है जब अधिक संख्या में लोग एक सीमित स्थान पर रहते हैं। पशुओं पर किए गए प्रारम्भिक अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि भीड़ से राग तथा व्याधियाँ पैदा होती हैं मनुष्यों पर हुए अध्ययन की सघनता न केवल व्यवहार को प्रभावित करती है उदाहरण के लिए—एक निश्चित स्थान पर अत्यधिक लोगों की उपस्थिति अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों, आक्रामक व्यवहार, सहायता परक व्यवहारों को प्रभावित करती है। भीड़ की अनुभूति वास्तव में व्यक्तिपरक स्तर पर गंभीर समस्या है भीड़ और सघनता दो भिन्न शब्द हैं। सघनता प्रति वर्ग फुट में लोगों की वास्तविक संख्या को प्रदर्शित करती है जबकि भीड़

व्यक्तियों में एक-दूसरे के साथ अत्यधिक सटे होने का प्रत्यक्षीकरण है।

भीड़ में सामान्यतः लोग लक्ष्य की रुकावट, बाधा और शारीरिक तथा मानसिक कष्ट का अनुभव करते हैं। जबकि जनसंख्या की सघनता का ऋणात्मक प्रभाव विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न पाया जाता है।

जनसंख्या विस्फोट एक बड़ी संख्या में ग्रामीण लोगों को बड़े शहरों की तरफ प्रस्थान के कारण उत्पन्न हुई है। बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न बहुमंजिली इमारतों का निर्माण किया जा रहा है। जिससे कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। भीड़ का महत्वपूर्ण परिणाम व्यक्ति के निजी जीवन में कमी तथा सामाजिक कलह की वृद्धि है।



प्राकृतिक एवं मानव निर्मित

आपदाओं का प्रभाव : प्राकृतिक आपदाओं के अंतर्गत भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, भूचाल, चक्रवात, अकाल, बाढ़ इत्यादि आते हैं। सन २००१ में लातूर और भुज में आए भूकंप तथा १९६४ में उड़ीसा में चक्रवात के कारण न केवल सम्पत्ति भौतिक पर्यावरण को नुकसान पहुँचा वरन् इसका दीर्घकालिक प्रभाव वहाँ रहने वाले लोगों के जीवन पर भी पड़ा है। आपदाएँ केवल प्राकृतिक ही नहीं मानव निर्मित भी होती हैं जैसे श्री माइल आरलैंड (१९७२), चेरनोबिल

(१९८६) तथा भोपाल गैस कांड (१९८४) का दीर्घकालिक दुष्प्रभाव वहाँ रहने वाले लोगों के जीवन पर भी पड़ा है।

भोपाल में अचानक हुआ गैस कांड शक्तिशाली और अनियंत्रित था। मिथाइल आइसो साइनाइड गैस के शिकार हजारों लोग आज भी शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। अध्ययनों से यह पता चलता है कि घटनाओं से जो लोग बच गए हैं उनमें दुश्चिंता, पलायन, अवसाद, क्रोध एवं दुःस्वप्न की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। श्री माइल

शेष पृष्ठ 11 पर

शेष पृष्ठ 11 पर

गुणकारी औषधि अजवाइन

~~२~~ रामसुमेर यादव

घरेलू मसाले में उपयोग होने वाली वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनकी स्वाद के लिए तो खाद्य पदार्थों में गिनती की जा सकती है साथ ही उनकी रोग निवारण क्षमता के लिए उन्हें औषधि भी कहा जा सकता है। अजवाइन ऐसा ही पौधा है, जिसके पत्ते, फूल, बीज सभी उपयोगी हैं। उसमें एक उड़नशील तेल होता है,



गंध से घबराते और भागते हैं। कुशल महिलाएँ जानती हैं कि अजवाइन का उपयोग कितनी मात्रा में किस खाद्य पदार्थ के लिए किया जाना चाहिए? भोजन पचाने के लिए सब्जी में बघार की तरह अजवाइन का उपयोग किया जाता है। गरम मसाला बनाने में अजवाइन का बड़ा भाग सम्मिलित किया जाता है। सौँफ-सुपारी-धनिया की भाँति ही चुनी हुई अजवाइन भी मुखशुद्धि के लिए काम में ली जा सकती है। यह पान का विकल्प है। अतिथि-सत्कार के रूप में इसका उपयोग चल पड़े तो इसे उचित और उत्तम ही कहा जाएगा, सस्ता भी पड़ेगा। पुदीना, धनिया, सौँफ, अजवाइन, अदरक, पालक, हरी मिर्च आदि को मिलाकर पीसकर चटनी बनती है। वह एक-दो दिन रखी भी जा सकती है। औषधि के रूप में इसे काम में लिया जा सकता है। अजवाइन पीसकर लेप करने से घुटनों का दर्द एवं सूजन को लाभ मिलता है। दाँत के दर्द में अजवाइन को पानी से उबालकर उसके पानी से कूल्हा करना चाहिए।

अजवाइन और लहसुन तेल में भूनकर छान लिया जाए। इस तेल को शरीर की पीड़ा में चोट में, कान के दर्द में प्रयोग किया जा सकता है। जाड़े के दिनों में जुकाम, निमोनिया आदि होने का डर बना रहता है। उसके लिए अजवाइन का चूर्ण काले नमक में मिलाकर गरम पानी के साथ दिन में दो-तीन बार लेना चाहिए। पेट में कीड़े हो जाने की स्थिति में वायविडांग और अजवाइन का चूर्ण प्रातः खाली पेट खाने से पेट की सफाई हो जाती है। छोटे या लंबे कीड़े मर जाते हैं। अजवाइन के फूलों को सुंदर गुलदस्ते की तरह मेज पर रखा जाए तो कमरे में अगरबत्ती जलाने की आवश्यकता पूरी हो जाती है। अंगारे पर अजवाइन डाल देने से भी ऐसी सुगंध उत्पन्न होती है, जिससे सारा घर महकने लगता है। अजवाइन ज्वर, श्वास, दस्त, उल्टी, अपच आदि में काम में लाई जा सकती है। चोट लगने में अजवाइन की पोटली बाँधकर, साथ में थोड़ा तेल मलकर, गरम तवे पर उसे गरम करते हुए सेक किया जा सकता है। अजवाइन उत्पन्न करना नितांत सरल है वह हर क्षेत्र में आसानी से उगाई जा सकती है।

आज के भौतिकवाद के चकाचौंध में मानव अध्यात्म मार्ग से दूर होता चला जा रहा है। यही कारण है कि मानव जगत में दिनों-दिन अशांति फैलती जा रही है। इस भागदौड़ की जिंदगी में मनुष्यों को अध्यात्म ज्ञान की अति आवश्यकता है। श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद मानव जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के मानस में हो रहे अन्तर्द्वन्द्व का प्रतीक है। मनुष्य के मानस में एक तरफ धर्म की कर्तव्यनिष्ठा है—दूसरी तरफ अधर्म है। धर्म—अधर्म, मोह कर्तव्य का द्वन्द्व हमारे भीतर से ही पैदा होता है। आइए हम भगवत गीता के संक्षिप्त सार से लाभ उठाएँ।

प्रथम अध्याय का सार

एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत।

वसृज्य सशरं चांप शोक संविग्नमानसः॥

अर्जुन ने अपने को धर्मात्मा मान कर युद्ध से निर्बल होने की अनेक दलीलें दी वह मोह में भरी थी। संसार का व्यक्ति जिस श्रेणी में है उसे ठीक समझता है। ऊँची श्रेणी की बात वह नहीं समझ पाते। स्वजनों को देखने से अर्जुन के मन में भी यह बात आई कि मैं युद्ध नहीं करूँगा, और अर्जुन अपना धनुष—बाण छोड़ कर रथ के पिछले भाग में बैठ गया। किन्तु अर्जुन को दो प्रकार का मोह हो गया था एक कुटुम्बी मारे जायेंगे दूसरा कुल के नाश से पितरों का पतन हो जाएगा। किन्तु श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जुन का मोह भंग हो गया और वह अपने कर्तव्य पालन द्वारा युद्ध के लिए तैयार हो गया। आइए श्रीकृष्ण का क्या उपदेश था संक्षिप्त में विचार करते हैं।

अध्याय २ का गीता सार

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहती पावक।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥२३॥

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल गीला नहीं कर सकता, वायु सुखा नहीं सकती। फिर हे अर्जुन ये सब कैसे मर जायेंगे। क्योंकि शरीर में परिवर्तन होता है, आत्मा में नहीं। यह संसार अनित्य है, एक क्षण स्थिर रहने वाला नहीं है। परन्तु आत्मा सदैव रहने वाला है। जब मनुष्य को असत अर्थात् नाशवान पदार्थ से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है तब सत का ज्ञान हो जाता है, वह ब्रह्मी स्थिति होती है। मेरा कुछ नहीं, इसको स्वीकार करने से मनुष्य निर्मम हो जाता है। मेरे को कुछ नहीं चाहिए, निष्काम, निरहंकार हो जाता है।

अध्याय तीन गीता का सार

कर्म ब्रह्मोद्वं विद्धि

ब्रह्मक्षरसमुद्धवम्।

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥१५॥

कर्म योग व ज्ञान योग दोनों

कर्मों से ही मनुष्य साधना प्राप्त करता है। निष्काम कर्म व सकाम कर्म मनुष्य के उत्थान में महत्त्वपूर्ण है। अज्ञान का बंधन ही दुख का हेतु है। यदि मनुष्य अपनी विशेषता को दूसरों के लिए समर्पित करता है तो वह विशेष बन जाता है। समस्त कर्म व सामग्री ईश्वर को अर्पण करना व ईश्वर की दात मानना ही निष्काम कर्म है। मनुष्य “मैं”, “मेरा”, “मेरे लिए” मानने से ही कमी महसूस करता है और कमी को सांसारिक पदार्थों से पूरा करना चाहता है जो कभी नहीं होती।

अध्याय चार गीता का सार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्यूत्थानम धर्मस्य तदात्मानं

श्रीमद् भगवत गीता का संक्षिप्त सार

सृजाम्यहम्॥७॥

धर्म व अधर्म—अधर्म का नाश करने हेतु समय—समय पर महापुरुष जन्म लेते हैं। सत्ययुग—त्रेतायुग—द्वापरयुग—कलियुग इनमें भी धर्म का हवास क्रमशः होता रहता है। ईश्वर की व्यवस्था से वेदानुसार धर्म व पुण्य को सम करने के लिए महापुरुषों को जन्म होता रहता है। कर्म योग संसार के लिए और योग अपने लिए क्रिया व पदार्थ एक क्षण भी स्थिर नहीं रहते। संसार की स्थिति, उत्पत्ति व प्रलय अवस्थाएँ हैं। जीवात्मा, प्रकृति व परमात्मा नित्य है। हम अपने स्वरूप को देखें तो उसमें समता, विषमता मिलती है। प्रत्येक कर्म का आरम्भ है तो समाप्ति भी है। अर्थात् सांसारिक कर्म बंधनों में ही आसक्त न होकर ईश्वर प्राप्ति ही मोक्ष व मुक्ति का मार्ग है।

अध्याय पाँच गीता का सार

ज्ञायैः स नित्यसंन्यासी यो न दोष्टि न कांक्षति।

निर्वन्दो हि महाबाहो सुखं

बन्धात्प्रमुच्यते॥३॥

जो व्यक्ति कर्मयोगी है निष्काम कर्म करने वाला है, उसे ज्ञान योगी ही समझो क्योंकि जो किसी से घृणा नहीं करता, किसी वस्तु की कामना नहीं करता, अर्थात् अपने पुरुषार्थ फल से संतुष्ट रहता है। हे महाबाहु अर्जुन उसमें सदा ज्ञान मार्ग की संन्यास मार्ग की भावना भरी हुई है। वह कर्मों के बंधन से सरलता से छूट जाता है।

अध्याय छः गीता का सार

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विधत्ते।

न हि कल्याण कृत्काश्चिद दुर्गतिं तात गच्छति॥४०॥

मनुष्य का विनाश न यहाँ होता है न वहाँ। नित्य के साथ अनित्य का सम्बन्ध कभी टिक नहीं सकता। बालक बचपन में खिलौने, से बड़े होने पर

रुपों से खेलता है आयु के साथ बचपन का मोह स्वयं छूट जाता है। संसार का स्वरूप है, वस्तु व्यक्ति और क्रिया वस्तु मात्र का प्राप्ति व अप्राप्ति होती है। व्यक्ति मात्र का संयोग व वियोग होता है। जो इन तीनों का व्यावहारिक त्याग करता है वही संन्यासी है।

अध्याय ७ गीता का सार

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्न मन्यते मामबुद्धयः।

परं भाव मजान्तो

ममात्ययमनुत्तमम्॥२४॥

कामना दो प्रकार की होती है।

१. पारमार्थिक कामना २. लौकिक कामना—लौकिक कामना दो प्रकार की होती है मुक्ति की व भक्ति की और लौकिक कामना भी दो प्रकार

सब कर्म ईश्वर अर्पण करने से शुभ अशुभ फलों से मुक्त हो जायेगा, और सब कुछ ईश्वर अर्पण करने वाला ईश्वर को प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य ईश्वर को छोड़ कर देवताओं की उपासना करते हैं क्योंकि उसमें क्रिया वस्तु की आवश्यकता होती है तो फल भी अन्त वाला होता है। किन्तु ईश्वर की प्राप्ति क्रिया वस्तुओं से नहीं हो सकती अपितु भावों से ईश्वर का साक्षात्कार आभास हो सकता है। मनुष्य किसी भी वर्ण का क्यों न हो, ईश्वर के दरबार में वर्ण भेद नहीं होता है अपितु भाव प्रधान व समर्पित योग से ही ईश्वर की प्राप्ति है।

अध्याय १० गीता का सार

यो मामजमनादि च वैती लोकमहेश्वरम्।

जो सुख दुःख रोग द्वेष से रहित है अर्थात् सम रहता है वह मुझे प्रिय है। और जो निर्गुण सगुण दोनों रूपों में ईश्वर को जानता है तथा सम्पूर्ण सृष्टि-क्रम उसी की नियंत्रण आज्ञा से चल रहा है वह ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वही ज्ञानी और भक्त कहलाता है।

अध्याय १३ गीता का सार

बहिरस्तश्च भूतानामचरं चरमेव च-१ सूक्ष्मत्वात्तद विज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत-॥१५॥

वह परमात्मा समस्त प्राणियों के बाहर भीतर परिपूर्ण है और दूर से दूर नजदीक से नजदीक, सूक्ष्म से सूक्ष्म है। पृथ्वी से दूर जल, जल से दूर तेज, तेज से दूर वायु—वायु में दूर आकाश, आकाश से दूर महत्त्व, महत्त्व से दूर प्रकृति, प्रकृति से दूर परमात्मा है। दूर होते हुए भी, ईश्वर व्यापक रूप से सब में है और प्रकृति से नजदीक स्थूल शरीर उससे निकट सूक्ष्म शरीर और उससे निकट कारण शरीर और उससे निकट अहम और अहम से निकट परमात्मा है।

अध्याय १४ गीता का सार

कर्मणः सुकृत्यस्याहुः सात्त्विकं निर्मल फलम्

रजास्तु फलं दुःख ज्ञानम तमसः फलम्॥१६॥

शुभ कर्म का फल सात्त्विक और राजस कर्म का फल दुःख है और तामस का फल अज्ञान है (मूढता है) गृणातीत मनुष्य से अनुकूलता बनी रहे और प्रतिकूलता चली जाए, ऐसी इच्छा नहीं होती। अन्तःकरण में वृत्तियाँ बदलती रहती हैं पर स्वयं उसमें निर्लेप रहता है वृत्तियाँ अन्तःकरण में हैं अपने में नहीं, साधक इसको इनको अपना न माने क्योंकि वह आने—जाने वाली है। परन्तु स्वयं निरन्तर रहने वाला है। अगर वृत्तियाँ संसार से होती तो जब तक हम रहते तब तक वृत्तियाँ रहती, परन्तु यह सबका अनुभव है कि हम तो निरन्तर हैं वृत्तियाँ आती—जाती रहती हैं। वृत्तियों का संबंध प्रकृति के साथ है, और हमारा संबंध ईश्वर के साथ है इसलिए वृत्तियों के परिवर्तन का अनुभव करने वाला स्वयं एक ही रहता है।

अध्याय १५ गीता का सार

मेमे वांशो जीवलोके जीव भूतः सनातनः।

मनः षष्ठानीन्द्राणि प्रकृति स्थानि कर्षति॥७॥

इस संसार में जीव व आत्मा स्वयं ईश्वर की प्रेरणा में हैं परन्तु वह मन और पाँचों इन्द्रियों को अपना मान लेते हैं। मनुष्य भूल से अपना संबंध प्रकृति के कार्य, शरीर, मन, बुद्धि से मान लेता है और ईश्वर से अपने संबंधों को भूल कर संसार में मैं और मेरा मानना ही व्यभिचार दोष है और यह दोष ही भक्ति में बाधक है। इस बाधा को दूर करने के लिए ईश्वर तत्त्व को समझना आवश्यक है। इसमें

अर्पण जैन 'अविचल'

की होती है सुख प्राप्त करने की व दुःख दूर करने की। तीनों दुःखों की आधिदेविक, अधिभौतिक, आध्यात्मिक दुःख के लिए देवताओं की उपासना करने वाले अधिक से अधिक पुनरावृत्ति लोकों में जा सकते हैं। देवताओं का फल नाश वाला होता है। अर्थात् जो



ईश्वर की उपासना छोड़ कर देवताओं की उपासना करते हैं वह अल्प बुद्धि वाले होते हैं।

अध्याय ८ गीता का सार

यं यं वापि स्मन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।

तं तमैवौति कौन्तेय सदा

तदभावभावतिः॥६॥

शुक्लमार्ग प्रकाशमय है और कृष्णमार्ग अन्धकारमय है। अन्तकाल में मनुष्य जिस जिस भावना का स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है उसको ही प्राप्त होता है। अर्थात् उस योनि में चला जाता है। संसार दुःखों का घर है कारण जो संसार की वस्तुओं से सुख लेता है वह उसके लिए है दुःखमय है और जो संसार की वस्तुओं से मानवों की सेवा करता है वह उसके लिए सुखमय है।

अध्याय ९ गीता का सार

शुभाशुभफलै रे वं माक्ष्यसे कर्मबन्धनै।

संन्यासयोगयुक्तात्मा

विभुक्तोमामुपैष्यसि॥२२

असंभूढ स मर्त्येषु सर्व पायैः प्रमुच्यते॥३॥

जो ईश्वर को अजन्मा, अनादि और महान मानते हैं और उसी प्रकार भजते हैं वह ईश्वर को पा जाते हैं। और सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाते हैं। संसार में जो कुछ भी क्रिया व

घटना आदि है वह सब ईश्वर का रूप है। अनुकूलता प्रतिकूलता, सुख, दुःख, प्रलय, उत्पत्ति समस्त ब्रह्माण्ड का चक्र यह उस ईश्वर की ही लीला है, अर्थात् वह सम्पूर्ण प्रकृति का ज्ञान करा रहा है।

अध्याय ११ गीता का सार

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।

शक्य एवं विधो दृष्टुं दृष्टं

दृष्टवानपि मां यथा॥५३॥

हे अर्जुन तुझे मैंने इस ब्रह्माण्ड का स्वरूप का ज्ञान कराया और उस महान परमेश्वर की शक्तियों का वर्णन भी ज्ञात कराया। अतः उस सर्वज्ञ को न दान से न यज्ञ से न वेदों से देखा जा सकता है वह तो केवल साधना मात्र से ही उस महान शक्ति को आत्मज्ञान में ही देखा जा सकता है।

अध्याय १२ गीता का सार

यो न हृष्यति न द्वोष्टि न शोचति न कांक्षति।

शुभाशुभपरित्यागी भक्ति मान्यः स मे प्रियः॥१७॥

आज उत्तर प्रदेश का देवबन्द सुन्नी इस्लाम की कट्टरता का वैश्विक प्रतीक बन चुका है और अविश्वसनीय रूप से जिहादी मानसिकता का एक मूल स्रोत भी कहा जा सकता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित दारुल उलूम नाम का एक विशाल इस्लामी मदरसा व मस्जिद का परिसर किस तरह भूगर्भीय कम्पन व भू-स्खलन का केन्द्र-बिन्दु-एपीसेंटर-व त्रुटिरेखा-फाल्टलाइन बन सकता है, यह स्वयं देशवासियों को सहसा एक चौंकाने वाला तथ्य लग सकता है। यह स्थान इस्लामी धर्मान्धता का प्रेरक ही नहीं, अपितु विश्व भर में सुन्नी आतंकवाद के वैचारिक आधार का पोषक व अभेद्य गढ़ भी एक अरसे से रहा है।

हाल में जब पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कैराना से लगभग 350 हिन्दू परिवारों के घर-बार छोड़कर पलायन की खबरों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों जैसे बहराइच, मेरठ, अलीगढ़ और शामली जिलों के साथ-साथ देवबन्द से भी 80 परिवारों द्वारा अपनी चल-अचल सम्पत्ति छोड़कर भागने के समाचार आये हैं, देश भर में एक नये सुनियोजित षड्यंत्र का खुलासा हुआ है। ऐसे तत्त्व पहचाने गये हैं, जिनमें स्थानीय मुस्लिम गुंडों को मुल्लाओं और मौलवियों का पूरा संरक्षण उपलब्ध होने की बात भी सामने आई है। इस संवैधानिक छेड़खानी की त्रासदी इसलिए भी गहराती दीखती है कि सन 2014 में उत्तर प्रदेश में चुनाव चल रहे हैं और सिर्फ देश का अंग्रेजी मीडिया ही नहीं, उनके हाहाकारी हो-हल्ले की अनुगूँज विश्व-स्तर पर भी देश को धार्मिक असहिष्णुता के नाम पर कटघरे में खड़े करने के लिए हमारे सामने आने लगी है। नकली धर्म-निरपेक्षतावादी, राजनेता, बुद्धिजीवी, व्यावसायिक मानवाधिकारवादी लगभग पिछले एक माह से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर, मेरठ, आजमगढ़, गोरखपुर, गाजियाबाद, फरीदाबाद, महाराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, देवरिया, मऊ, बलिया, जौनपुर, गाजीपुर, संत रविदासनगर, चंदौली, मीरजापुर आदि संवेदनशील क्षेत्रों के साथ-साथ स्वयं दिल्ली के अनेक बाहरी क्षेत्रों में मिनी-पाकिस्तान का निर्माण करने में जुटे हैं। यह वही जिले हैं, जहाँ 'हरित प्रदेश'

के नाम से उत्तर प्रदेश के विभाजन व प्रस्तावित पूर्वांचल राज्य की माँग आज अंग्रेजी दैनिकों के समर्थन के साथ उठाई जा रही है। यह आवाज देश के अंग्रेजी प्रेस का ऐसा 'वृन्दवादन' है, जिसके माध्यम से ऊपर-ऊपर से तो वहाबी, सलाफी या सुन्नी कट्टरता के विरुद्ध आवाज उठाई जाती है; पर यह भ्रमित करने वाली औपचारिकता ही होती है और

के साथ 'राष्ट्रीय सहारा' नामक दैनिक पत्र में रंगीन चित्र छपवा कर देश को क्या संदेश दिया था? क्या कोई मौलवी 'भगवा' हिन्दू वेश धारण करने का साहस दिखाएगा? इतना ही नहीं 12 मई 2012 में बाबा रामदेव ने नई दिल्ली के इस्लामिक कल्चरल सेन्टर में 'बिसमिल्लाह' करते हुए दलित मुस्लिम व ईसाइयों को आरक्षण दिलाने के लिए संघर्ष

किलिंग' के तर्क कहाँ तिरोहित हो गये? यह भी कहा जा रहा है, शाबान और हिन्दू लड़की का निकाह भी जामा मस्जिद में हुआ था और कहा जाता है कि इमाम की रजामंदी तब मिली, जब हिन्दू लड़की ने धर्म परिवर्तन के लिए हामी भरी थी।

आज जहाँ दारुल उलूम को देश के सेकुलरवादी देशभक्ति का प्रमाणपत्र देने में कभी नहीं

अंतिम होता है। उनका सहधर्म भी काफिर या धर्मव्युत-एपोस्टेट हो सकता है। ईशनिन्दा-ब्लासफेमी-क्या है उसे क्या दंड मिलना या नहीं मिलना चाहिए, केवल वही निर्णय ले सकते हैं। उदार कहलाने वाले मुसलमानों का धर्मसंकट यह है कि देवबन्द का इतिहास जाने बिना कभी-कभी इस पर अंधविश्वास करने वाले को गैर-इस्लामी कहना गलत है, आत्मप्रवचना है।

भला आतंकवादी, बुरा आतंकवादी, अच्छे तालिबान, बुरे तालिबान; अच्छे मुस्लिम, बुरे मुस्लिम, हमारे देश में स्वयं देवबन्दी या कुछ दूसरे बड़े मदरसों द्वारा यह भ्रमजाल फैलाया गया था, जिसे चाहे अमेरिका हो या हमारे देश की सेकुलरवादी भीड़ हो, अपने राजनीतिक चरमों के कारण स्वीकार किया था। दुनिया को दो नये खेमों में बाँटने के कारण हमने अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारी है। पहला समूह एक कट्टरवादी इस्लामी देशों का है, जैसे इराक, सीरिया, अरब देश, ईरान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मलेशिया, अफ्रीका तथा यूरोप के अर्द्ध-इस्लामी देश। दूसरी ओर विश्व भर के लोकतांत्रिक देश। एक नया नारा जिहादी विचार धारा पर पर्दा डालने के लिए भारत सहित अनेक देशों के बुद्धिजीवी लगाने में जुटे हैं-भले मुस्लिम, बुरे मुस्लिम। इस धोखे का पर्दाफाश करने के लिए देवबन्द के इतिहास का अध्ययन पर्याप्त है। उनके हर फतवे या मौलवियों या इमामों के वक्तव्यों का सार यही है कि अपनी पहचान के अहसास को बढ़ाते हुए हिन्दू विरोध व पार्थक्य पर बल देना अनिवार्य है जिससे इस्लामी अर्थव्यवस्था व शासन (पालिटी) को मुखर किया जा सके।

यह भी तथ्यपरक व देशवासियों द्वारा भुलाया गया एक सच है कि दारुल उलूम देश की सबसे बड़ी इस्लामी सेमिनरी (धार्मिक शिक्षण संस्था) है, जिससे 3000 से अधिक मदरसे स्वीकृत एवं जुड़े हुए हैं। इसने 23-24 मार्च, 2014 में ही अपने दो दिवसीय सम्मेलन में एक निर्णय लिया था कि उन्हें अपने कार्यक्रमों के लिए नरेन्द्र मोदी ने अपने गत वर्ष के बजट में मदरसों के आधुनिकीकरण व कम्प्यूटर विज्ञान आदि विषयों के लिए जो रु. 9000 करोड़ का प्रावधान किया था, वह उन्हें मंजूर नहीं है। (शेष अगले अंक में)

सुन्नी या वहाबी इस्लाम का वैश्विक वैचारिक स्रोत देवबन्द

हरिकृष्ण निगम

स्वयं विवादित मुस्लिम संगठनों के प्रचार को प्रमुखता दी जाती है। ये संगठन हैं-महदी फाउंडेशन, इंटरफेस स्प्रिचुअल एसोसिएशन या पीस टी.वी. चैनल जहाँ अंग्रेजी बोलने वाले जाकिर नायक शांति की बातों की आड़ में दूसरे धर्मों व मूर्तिपूजकों के विनाश की कसमें

की घोषणा की थी। क्या कोई मुस्लिम नेता या मौलाना 'ऊँ' का जाप करते हुए हिन्दुओं पर हो रहे सौतेले व्यवहार के लिए संघर्ष करेगा?

इसी तरह दारुल उलूम के इमाम व प्रवक्ता जो हर बात पर 'फतवा' जारी करते हैं, 'लव

हिचकिचाते हैं, उसके प्रमुख इमाम व प्रवक्ता यह कहने से नहीं चूकते हैं कि मोदी सरकार द्वारा बनाये गये सभी विधेयकों या अधिनियमों के प्रारूप 'शरिया कम्प्लायेंट' अथवा शरीयत-समुनुकूल होना चाहिए। यह उनकी मूलभूत शर्त है। कहा जाता है कि सारे इस्लामी विश्व में तीन ऐसे केन्द्र हैं जहाँ क इमाम व मौलाना दुनिया के मुसलमानों को कभी निर्देशों व बहुधा फतवे जारी कर धार्मिक आचरण के मानदंड देते रहते हैं। इनमें सऊदी अरब, ईरान, मिस्र एवं तुर्की के इमामों का जिक्र तो बार-बार आता है, पर हम भूल जाते हैं कि जिनके कारण सुन्नी या वहाबी धर्मान्धता का विश्व भर में विषवृक्ष फैल रहा है, उसका जनक भारत स्थित सहारनपुर है। आज देवबन्द एक ऐसा आलंकारिक मुहावरा है, जो इस्लामी स्टेट या आई.एस. आई.एस. की पुनर्प्रतिष्ठा की असली जड़ दारुल उलूम के कारण है। यह टिप्पणी सतही नहीं है; क्योंकि देश की स्वतंत्रता के दशकों पहले से सातवीं सदी के इस्लाम का पुनर्निर्माण व इसे जीवित करने का यह यत्न कर रहा है। चाहे मध्य एशिया के देश हों या दक्षिण पूर्वी एशिया के या उत्तरी दक्षिणी गोलार्द्ध के, हजारों लाखों मुसलमानों में देवबन्द के प्रति आकर्षण रहता है। एक 'प्रोफेटिक मेटेडोलॉजी' के तहत यह उनकी सारी गतिविधि, घोषणाएँ, शरिया-सम्मत कानून होने या न होने का निर्णय देवबन्द से शुरू होता है। हर निर्णय पैगम्बर साहब के वक्तव्यों की प्रेरणा से अनुप्राणित होना चाहिए। क्या गैर-इस्लामी है, इनका निर्णय



खाते हैं। क्या हम भूल जायेंगे कि जाकिर नायक स्वयं जिहाद के समर्थक रहे हैं और अन्तर्धार्मिक विमर्श के नाम पर ईसाई धर्म प्रचारकों व पादरियों के विरुद्ध खुलकर घृणा के शब्दों व अभद्र भाषा का भी उपयोग करने से नहीं चूकते हैं। उनका हिन्दू-विद्वेष प्रच्छन्न है, इसलिए सेकुलरवादी नेताओं व बुद्धिजीवियों का संरक्षण उन्हें अनेक रूपों में मिलता रहा है। लगभग 8 वर्ष पहले योग-गुरु बाबा रामदेव ने स्वयं दारुल-उलूम देवबन्द में मौलानाओं के साथ बैठकर जब 'वंदेमातरम्' का विरोध हो रहा था, मौन रख लिया था। क्या कोई मुल्ला या आस्थावान मुसलमान अल्लाह हो अकबर के विरोध पर मौन रहेगा? रामदेवजी ने ही 16 से 19 नवम्बर 2010 में मुस्लिम या अरबी लिबास धारण कर अपने दोनों ओर मुसलमानों

जिहाद' पर विधर्मियों के साथ मुस्लिम युवाओं की शादी पर क्यों चुप्पी साध लेते हैं। शाही इमाम का सारा खानदान पूर्व ताशकन्द स्थित 'बोखारा' कुलनाम कैसे उपयोग कर सकता है, जिनकी अपनी रंगों में हिन्दुओं का रूधिर दौड़ता है? इमाम सैयद अहमद बुखारी के बेटे और उनके उत्तराधिकारी शाबान ने हाल में हिन्दू लड़की से विवाह कर लिया। क्या बुखारी के बेटे का यह 'लव जिहाद' तो नहीं था? लड़की यू. पी. के गाजियाबाद की रहने वाली है। दोनों के बीच पिछले दो सालों से प्रेम चल रहा था। शाबान ने कहीं अपनी पहचान छिपाकर तो एक हिन्दू लड़की को अपने जाल में नहीं फँसाया, इस पर यह बातें चल रही हैं कि मुसलमानों के परिवार की इज्जत के नाम पर 'ऑनर

जरा याद करें। कुछ महीनों पहले दिल्ली के उस विख्यात विश्वविद्यालय में नारा लगा था—'भारत तेरे टुकड़े होंगे, ईशा अल्लाह ईशा अल्लाह', जिसका नामकरण इस देश के प्रथम प्रधानमंत्री के नाम पर किया गया था। जिस व्यक्ति ने भारत के टुकड़े कराये थे, उसके नाम पर बनाये गये विश्वविद्यालय में यदि ऐसा नारा न लगता, तो और कहाँ लगता! पाकिस्तान बनाये जाने के विरोध में जो जिन्ना के विरुद्ध निरन्तर ताल ठोंकता रहा हो, लगातार वाक्-बाण चलाता रहा हो, उसे अकस्मात् ऐसा क्या हो गया कि विरोध करते-करते एकदम पिलपिला गया और जिन्ना का 'जिन्न' पाकिस्तान बनाने के पक्ष में सहमत हो गया? इस प्रश्न का उत्तर उस खुले रहस्य में छिपा है, जिसका कोई भी नाम नहीं लेता। ले भी क्यों; क्योंकि उससे हमारे उस लोकप्रिय राजनेता की बड़े यत्न से बनाई गई छवि धूमिल ही नहीं, कलंकित हो जाएगी। लेकिन सत्य पर कितना



महासागर के मोर्चे पर ब्रिटिश सेना के सर्वोच्च कमांडर एडमिरल लुई माउंटबैटन और उनकी रूपसी पत्नी एडविना से नेहरू का सम्पर्क सिंगापुर में द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति पर कराया जाता है। एडविना कितनी चरित्रवती थी, यह तो स्वयं उसकी पुत्री पामेला माउंटबैटन की लिखी पुस्तक से ही विदित है। नेहरू पर एडविना का जादू ऐसा चढ़ा कि

रहना है, शेष सम्पूर्ण विश्व भी सतत 'इस्लामी जिहादी आतंकवाद' से त्रस्त रहने को अभिशप्त रहेगा। इस तथ्य से आँखें चुराना आत्मघाती होगा, यह भी सुनिश्चित है विशेषकर भारत के लिए। शेष विश्व का नम्बर तो बाद में आएगा। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में भारत-विभाजन के इस जघन्य अपराध के दोषी चेहरों को ठीक से जानना-पहचानना सर्वोपरि अपरिहार्यता है। इन चेहरों में सबसे पहले आने वाला चेहरा है क्लीमेंट एटली, तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री का। द्वितीय विश्वयुद्ध के इस विजयी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की कमर टूट चुकी थी। भारतीय सेना 'नेताजी प्रभाव' से उपस्थिति में 'जयहिन्द' बोलने लगी थी। नौसेना-विद्रोह ने अंग्रेजों को अंदर से थरा दिया था। ऐसे में

'भव्य स्वागत' करने को सन्नद्ध देखकर वह भाग खड़ी हुई। हाँ; जम्मू-कश्मीर की जैसी दुर्दशा नेहरू-माउंटबैटन-शेख अब्दुल्ला की तिकड़ी के कारण हुई आज तक हो रही है, वह स्वतः स्पष्ट है। यदि पटेल न होते, तो जम्मू-कश्मीर का आज का भारतीय क्षेत्र भी जिन्ना ने हड़प लिया होता। एक स्वतंत्र देश तिब्बत पर चीन का आधिपत्य कराकर नेहरू जी ने भारत की सीमा पर 'अग्निमुखी अजगर' को फुफकारने का अवसर दे डाला, यह एक चिरन्तन क्षति है। अब तक डेढ़ लाख वर्ग कि. मी. से अधिक क्षेत्रफल भारत गँवा चुका है और भारतवर्ष के जो क्षेत्र लगभग 9 हजार वर्ष तक इस्लामी शासन व उसके भीषणतम अत्याचारों के पश्चात् भी हिन्दूविहीन नहीं हुए थे, गत 70 वर्षों में हिन्दूविहीन हो चुके हैं। इसकी सुधि किसे है? क्लीमेंट एटली के बाद अपराधी नम्बर 3 माउंटबैटन हैं, जिन्होंने अपने राष्ट्र के हित में अपनी रूपवती पत्नी

खुलना के हिन्दू-संहार की भीषणता से नेहरू-गाँधी कांग्रेस के पुनपुने काँप उठे थे और इससे घबराकर पाकिस्तान स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त उसे और कोई रास्ता ही नहीं सूझा, यह इतिहास-सिद्ध तथ्य है। देश-विभाजन की अत्यन्त भयावह त्रासदी विश्व की एकमेव ऐसी परिघटना है, जिसके फलस्वरूप 20 लाख से अधिक हिन्दू-सिख मारे गये; ढाई करोड़ के लगभग विस्थापित होकर शेष बचे भारतीय भूभाग में शरण लेने को बाध्य हुए और एक लाख से अधिक ललनाओं को मध्य-एशिया के बाजारों में भेड़-बकरियों की तरह बेचा गया। मुस्लिम खरीददार उनकी मांसलता को मसल-मसलकर ऐसे देखते थे, जैसे कसाई पशुओं को देखता है। ऐसे वीभत्स अपमानजनक चित्रों को देखकर किसकी आँखें न छलक उठेंगी; किसका रक्त न खौल उठेगा; यह सब आज हम सेक्यूलरिज्म की

पाकिस्तान को तो मिटाना ही होगा

आनन्द मिश्र 'अभय'

भी मोटा आवरण भले ही क्यों न डाला जाये, वह उजागर होकर ही रहता है और यह सत्य है उस नेता की लंगोटी पक्की न होने का। क्या विश्व के किसी भी देश के किसी भी नेता ने मात्र अपनी 'निजी ऐयाशी' के लिए अपने देश का ऐसा भीषण अंग-भंग कराना स्वीकार किया है, इस पर इतिहास का मौन कितना मुखर है, यह भी स्पष्ट है।

अपने यह प्रथम प्रधानमंत्री थे पं० जवाहरलाल नेहरू, जिनकी देशभक्ति पर किसी को रंचमात्र संदेह नहीं था; उनकी लोकप्रियता भी अपने शिखर पर थी। भगवत्कृपा से उन्हें वह सब कुछ प्राप्त था, जिसकी इस लोक में सभी आकांक्षा रखते हैं—सम्पन्न कुल में जन्म, लब्धप्रतिष्ठ पिता का संरक्षण, अति सौष्ठवपूर्ण देहयष्टि, बैरिस्टरी तक की उच्च शिक्षा, कमला नेहरू जैसी कमनीय सुशीला पत्नी, इंदिरा प्रियदर्शनी जैसी पुत्री, राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करते ही देशव्यापी ख्याति, गाँधी जी जैसा अभिभावक, संरक्षक; परन्तु हाँ; दैव-दुर्विपाक से एक कमी थी—अल्पकालीन गार्हस्थ-सुख; क्योंकि कमला नेहरू का भरी जवानी में निधन हो गया था। चिर-विधुर नेहरू की इस कमी का दूरदर्शी अंग्रेज ने गहनता से आकलन कर अपने राष्ट्रहित में उसे जितना भुना सकते थे, भुनाया और इसके लिए माउंटबैटन-दम्पति से अच्छा माध्यम भला दूसरा कौन हो सकता था! ब्रिटिश राजघराने से सम्बन्धित प्रशान्त

जीवन-पर्यन्त नहीं उतरा। एक सोची-समझी नीति के अंतर्गत लार्ड वैवेल को हटाकर माउंटबैटन को भारत का वायसराय बनाकर दिल्ली भेजा जाता है और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिंद फौज के भारतीय सेना पर 'जयहिंद' प्रभाव से अन्दर ही अन्दर भयाक्रान्त ब्रिटिश सत्ता ने अन्ततोगत्वा भारत छोड़कर चले जाने का निर्णय किया; लेकिन उसे तहस-नहस करने की कूट-योजना के अंतर्गत, जिसे 'माउंटबैटन प्लान' कहा जाता है। भारत-विभाजन, पाकिस्तान का निर्माण, 55 देशी रियासतों से संघियों का विसर्जन आदि-आदि सभी पर कांग्रेस की सहमति लेने में कूटनीतिक सफलता, इन सभी का श्रेय माउंटबैटन से अधिक एडविना के जादुई प्रभाव को जाता है। 9 अगस्त, 1947 को लोकमान्य तिलक के आकस्मिक निधन और तदनन्तर अंग्रेजों की दुरभिसन्धि से कांग्रेस पर गाँधी जी का क्रमशः बढ़ता या बढ़ाया जाता वर्चस्व और 1948 आते-आते देश के विभाजन की विभीषिका का इतिहास तत्संबंधी लिखी गई पुस्तकों के पन्नों पर विस्तार से अंकित है। 'एडविना-प्रभाव' ने नेहरू जी की तब तक अर्जित समस्त कीर्ति पर पानी फेर दिया। आज यह देश ही नहीं, पूरा विश्व पाकिस्तान की काली करतूतों से त्रस्त है। 'इस्लामी-आतंकवाद' की इस सबसे बड़ी फैक्टरी के बने रहते भारत का अस्तित्व तो असंदिग्ध रूप से संकटग्रस्त बना ही

एटली ने विध्वंसक सैन्य-नीति का अवलम्ब लेकर भारत का विभाजन कराने का निश्चय लिया। भला हो उन डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का, जिन्होंने मजहब के आधार पर पाकिस्तान बनाना निश्चित जानकर उसके बनने से पहले ही उसका विभाजन करा दिया। फलतः हिन्दू-बहुल पूर्वी पंजाब और पश्चिमी बंगाल बने। नेहरू की एडविना-आसक्ति ने उनको एक प्रकार से दिवान्ध बना दिया था अन्यथा 59 प्रतिशत हिन्दू-बहुल कराची, लगभग 70 प्रतिशत हिन्दू-बहुल सिंध का थारपारकर जिला, लाहौर तथा चटगाँव पर्वतीय क्षेत्र (67 प्रतिशत हिन्दू-बौद्ध) भारत में होते। चटगाँव में तो 95 अगस्त, 1948 को तिरंगा झंडा फहराया गया था; क्योंकि वहाँ के लोगों को विश्वास था कि उनका क्षेत्र लगभग पूर्णतः हिन्दू होने के कारण भारत में ही रहेगा। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि अंडमान-निकोबार द्वीप-समूह जिन्ना के आग्रह पर माउंटबैटन ने पाकिस्तान के हवाले करने का मन बना लिया था और नेहरू जी से भी हामी भरवा ली थी; पर सरदार पटेल के रहते यह संभव न हुआ। जिन्ना के सहायक रहे रैड क्लिफ ने अपने अधिनिर्णय (अवार्ड) में जानबूझकर लक्षद्वीप व मिनीकाय द्वीप समूहों को यों ही छोड़ दिया था कि पाकिस्तान उन्हें चुपके से हथिया सके; पर यहाँ भी सरदार पटेल की दूरदृष्टि आड़े आ गई और इन पर भारतीय नौसेना को पहले से ही पाकिस्तानी नौसेना का

एडविना को नेहरू को एक प्रकार से समर्पित कर देने में भी लज्जा या संकोच नहीं किया। एडविना इस क्रम में नं० 8 है। अपर पक्ष में मोहम्मद अली जिन्ना व नवाबजादा लियाकत अली ख़ाँ तथा हसन शहीद सुहरावर्दी व मुस्लिम नेशनल गार्ड का प्रमुख मुजीबुर्रहमान क्रमशः 5, 6, 7 व 8 नम्बर पर आते हैं। इस सूची में क्रमांक 6 पर आने से गाँधी जी को वंचित रखना उनके साथ अन्याय होगा; क्योंकि यदि उन्होंने खिलाफत आन्दोलन की पूँछ में असहयोग आन्दोलन को हिन्दू-मुस्लिम एकता की मृग-मरीचिका में फँसा कर न बाँध दिया होता, तो लोकमान्य तिलक का भक्त रहा मोहम्मद अली जिन्ना कभी गाँधी को ललकारने की राह पर न जाता और पाकिस्तान बनवाने पर न तुल जाता। मालाबार हिल्स पर उसके बंगले पर लगातार 98 बार जाकर मनाने का प्रयत्न गाँधी जी न करते और 'कायदे आजम' कहकर उसकी हैसियत न बढ़ाते, तो वह कभी उनके समकक्ष खड़े होकर उन्हें नीचा दिखाने की जुरत न करता। नेहरू-व्यामोह में व माउंटबैटन के कहने से महासमिति में विभाजन का समर्थन कर उन्होंने जो भयंकर भूल की, उस दोष से उन्हें बरी करना इतिहास के लिए संभव नहीं है। मुस्लिम लीग के 'डाइरेक्ट ऐक्शन डे' (16 अगस्त, 1948) के दिन कलकत्ता की सड़कों पर 90,000 से अधिक हिन्दुओं की हत्या व नोआखाली, बारीसाल व

झोंक में भले ही भूल चुके हों; पर इतिहास अपने रक्तरंजित पृष्ठों को फाड़कर नहीं फेंक सकता। मात्र हिन्दू-द्वेष के आधार पर बना पाकिस्तान भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए कितना बड़ा संकट बनकर खड़ा हो जाएगा, इस्लाम के इतिहास से अनभिज्ञाप्राय हमारा तत्कालीन नेतृत्व शायद यह सोच सकने में भी असमर्थ रहा। परिणाम सामने है—जो भूमि कभी हिन्दूविहीन कर पाने में 600 वर्ष का मुस्लिम शासन भी समर्थ नहीं हो पाया, वह हमारा 9/8 भूभाग गत 70 वर्षों में लगभग हिन्दूविहीन हो चुका है और हमें इतनी फुर्सत तक नहीं कि उधर देख सकें! अस्तु।

परन्तु यह न भूलें कि इतिहास किसी को कभी क्षमा नहीं करता। अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर के नाटकों में एक शब्द नेमिसिस (Nemesis) कई बार आया है, जिसका अर्थ है 'दैवीय प्रतिशोध'। भारत-विभाजन के अपराधियों को भारत की जनता भले ही उचित दंड न दे सकी हो, पर कर्म-विपाक से अपराधी कभी बच नहीं पाते। एटली की मृत्यु कैसे हुई, पता नहीं, पर गवर्नर जनरल जिन्ना की मृत्यु कैसी अपमानजनक स्थिति में उसके अपने प्रधानमंत्री लियाकत अली ख़ाँ की घोर तिरस्कारपूर्ण उपेक्षा से हुई, यह विदित है। राजयक्ष्मा से कंकालमात्र रह गये शरीर के कटे से कराची लाते मार्ग में पुरानी एबुलेस में ही हुई और

(पिछले अंक का शेष)

ये सेक्यूलरवादी ही हैं, जिन्होंने इस्लामी अपराधों के इतिहास के बारे में सत्यों को दबाया है या विकृत करके प्रचारित किया है। ये इस्लाम की सत्य प्रकृति पर बहस करने के मार्ग को रोकते हैं, और इस प्रकार भारतीय समाज को बहुत अधिक हानि पहुँचाई है। सचमुच में इन्होंने धिम्मीवादी मानसिकता का वातावरण पैदा करने का षड्यंत्र रचाया हुआ है, जो कि आपको केवल इस्लाम, इसके पैगम्बर और इसके धर्म-ग्रन्थों की प्रशंसा करने की अनुमति देता है। परन्तु इस्लाम की तर्कयुक्त परीक्षा करने की आज्ञा नहीं देता। अतः भारत में सदा शान्ति एवं सौहार्द बनाए रखने के लिए सबसे पहला उचित कदम यही होता है कि इस्लाम की प्रकृति पर स्वतंत्रतापूर्वक सेक्यूलरवादियों के असली स्वरूप को नंगा किया जाए जो कि उचित और स्पष्ट बहस करने के विषय में चकमा देते, तोड़ते, मरोड़ते और ध्यान बँटाते हैं।" (कृष्णा स्वामी, छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा, पृ० ३१ ता ३५)

भारतीय मुसलमानों के पूर्वज इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पूर्व हिन्दू ही थे। इनके पुरखे हिन्दू धर्म में अगाध निष्ठा रखते थे। इनकी रगों में हिन्दू संस्कृति

का रक्त ही प्रवाहित होता है। अतः हिन्दू पूर्वजों के मतान्तरित भारतीय मुसलमानों को चाहिये कि वे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कपट, लड़ाई-झगड़ा, लूटमार, हत्या व जिहाद सम्बन्धित कुरान की सभी मध्ययुगीन आयतों को नकार दें।

मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जेड० एस० लोहाट, दिल्ली ने भी कुरान मजीद की चौबीस आयतों (सलंगनक पृ० ११-१४) पर आधारित एक पोस्टर पर I.P.C की धारा १५३ I और २६५ I के अन्तर्गत (FIR No. २३७६८३ U/S २३५ए I.P.C. हौजकाजी, पुलिस स्टेशन, दिल्ली) पर आदेश दिनांक ३१/७/१६८६ के द्वारा निर्णय दिया

जी ने कुरान पढ़ी होती तो....।" को कांग्रेस शासन ने सन् १९८७ में प्रतिबंधित कर लेखक के विरुद्ध वाद दायर किया, जिसमें माननीय



वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम

प्रो० ए०पी० सारस्वत

कि - "कुरान मजीद की पवित्र पुस्तक के प्रति आदर रखते हुए उक्त आयतों के सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ये आयतें बहुत हानिकारक हैं और घृणा की शिक्षा देती हैं, जिससे एक तरफ मुसलमानों और दूसरी ओर देश के शेष समुदायों के बीच मतभेदों के पैदा होने की संभावना है।" कुरान की कुछ आयतों के आधार पर श्री बिशन स्वरूप गोयल की पुस्तक "काश-गाँधी

न्यायधीश श्री सी० के० चतुर्वेदी ने आदेश दिनांक १०/१/१६८६ "..... लेखक को इस बात पर रोष है कि ईश्वर मानव-मानव में भेद कैसे कर सकता है? इस सम्बन्ध में लेखक ने कुरान के हिन्दी संस्करण को पढ़कर निष्पक्ष रूप में बलपूर्वक अपने तर्क प्रस्तुत किये हैं।..... अतः किसी एक व्यक्ति की विचारोन्मुखि से दूसरे की असहमति विशेष महत्व नहीं रखती। मेरे विचार से यह रचना

किसी भी दृष्टि से धार्मिक दुर्भावना को बढ़ावा नहीं देती। लेखक ने इस कृति में भारत के विभाजन पर एक विशिष्ट दृष्टि से विचार

किया है। चाहे उसके विचार कितने ही तर्कहीन, व्यर्थ एवं अल्प ज्ञान पर आधारित क्यों न हो किन्तु उक्त स्थिति में अभियुक्त को निर्दोष घोषित किया जाता है। सम्बद्ध फाइल को अभिलेखागार में रख दिया जाये।" के द्वारा पुस्तक से प्रतिबन्ध हटा दिया।

"यह एक सत्य है कि भारतीय मुसलमानों के पिछाने प्रतिशत पूर्वज हिन्दू थे, जो कि इस्लामी साम्राज्य से पीड़ित थे। ये सांस्कृतिक और मानव विज्ञानीय दृष्टिकोण से पूर्णतः भारतीय हैं। उन पर इस्लाम की विदेशी अरबी संस्कृति एवं विचारधारा कहरता से थोपी जाने के कारण उनकी वंफादारी वैश्विक इस्लामी समस्याओं के साथ रहती है क्योंकि वे दुर्भाग्य से अपने पूर्वजों के बलात् धर्म परिवर्तन के निर्मम इतिहास को नहीं जानते हैं। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति और अज्ञानता के कारण उनके अन्दर एक अलग पहचान के संकट की स्थिति पैदा कर दी गई है और उनको सांस्कृतिक दृष्टि से जड़हीन और विरोधी जैसे लोगों में परिवर्तित कर दिया गया है। इस्लाम में परिवर्तित होते ही उन्हें

अरबी नाम, अरबी संस्कृति और अरबी रीति-रिवाज अपनाना पड़ता है। यहाँ तक कि उन्हें मक्का की ओर पांच बार मुँह करके ईश्वर प्रार्थना करते हुए उस देश के प्रति श्रद्धा प्रकट करनी होती है। संक्षेप में, धर्मान्तरण के साथ -साथ राष्ट्रान्तरण भी हो जाता है। मुसलमानों और इस्लाम के बीच के अन्तर को समझना आवश्यक है। दोनों एक जैसे नहीं हैं। वास्तव में सामान्य मुसलमान कट्टरवादी कुरानी विचारधारा के शिकार हैं।" (कृष्णा स्वामी, छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा, पृ० १८)

संभल के बसपा सांसद श्री शफीकुर्रहमान बर्क ने संसद में दिनांक ५ मई, २०१३ को, राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के गान का बहिष्कार कर, भारतीय संविधान व सर्वोच्च संस्था 'संसद' को खुले-आम चुनौती दी तथा संसद में राष्ट्रगीत के विरोध के माध्यम से हिन्दू पूर्वजों के उदार मतान्तरित भोले-भाले मुसलमानों को बरगलाने का प्रयास कर भारत की अखण्डता को चुनौती देने का दुःसाहस किया है। उनका यह निन्दनीय घृणित कृत्य पूर्व में वर्ष २००६ में आतंकियों द्वारा संसद में व वर्ष २००८ में मुम्बई के ताज होटल पर आतंकी हमलों द्वारा भारत की अखण्डता को चुनौती देने के प्रयास के समकक्ष ही माना जायेगा। अतएव राष्ट्रगीत के विरोधी भी आतंकियों की श्रेणी में आते हैं। राष्ट्रगीत के बहिष्कार के पक्ष में श्री बर्क का कथन है कि "सही मुसलमान सिर्फ अल्लाह के आगे झुकता है, जबकि वन्देमातरम् की भावना मुसलमानों की शरीयत व इस्लाम के विरुद्ध है। मैं सांसद जरूर हूँ, लेकिन मुसलमान पहले हूँ, मैं इस्लाम के विरुद्ध नहीं जा सकता।" (दैनिक जागरण, मेरठ दिनांक १० मई, २०१३) अर्थात् बर्क की नजर में देश से बड़ा मजहब है, जबकि राष्ट्र सर्वोपरि है।

(शेष अगले अंक में)

संविधान लागू होने की ६७ वीं वर्षगाँठ (२६-०९-२०१७)

१. यह विश्व का हस्तलिखित सबसे बड़ा संविधान है जिसमें ३६५ अनुच्छेद हैं।
२. नेहरू समर्थक इसे सर्वश्रेष्ठ कहते हैं।
३. सावरकर समर्थक इसे सबसे घटिया कहते हैं।
४. इसमें अभी तक लगभग १२५ बार संशोधन हो चुके हैं।
५. डा० अम्बेडकर ने स्वयं कहा था कि मुझ से ऐसा ही संविधान बनवाया गया है। मैं इसे श्रेष्ठ कैसे कह सकता हूँ।
६. इसमें देश के दो नाम हैं जबकि एक ही नाम हिन्दुस्तान होना चाहिए था।
७. ८ वीं अनुसूची में विभाजनकारी और पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा उर्दू को भी स्थान दिया गया है जो कि हर प्रकार से अनुचित है।
८. ४४ वें अनुच्छेद में लिखा है कि समान नागरिक संहिता बनाने का प्रयास किया जाए जबकि गोवा में लागू समान नागरिक संहिता को ही लागू कर देना चाहिए था जिसमें १०५ अनुच्छेद हैं।
९. मुगल काल में कई हजार मन्दिरों को तोड़ा गया और वहाँ मस्जिदें बना दी गईं। इन मन्दिरों की पुर्नवापसी और जीर्णोद्धार के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया है।
१०. शेख अब्दुल्ला स्वयं को सेकुलर कहते थे। देश का संविधान सेकुलर सोच वालों ने बनाया फिर शेख अब्दुल्ला ने अनुच्छेद ३७० लगाने की गलत मांग क्यों की? और उसे क्यों माना गया? उन्हें समझाना चाहिए था कि वे बेशक मुख्यमंत्री बनें तो भी जम्मू-कश्मीर अन्य राज्यों की भाँति सामान्य राज्य ही रहेगा।
११. विनाश काले विपरीत बुद्धि। पाकिस्तान बनवाने के बाद भी हिन्दू के अच्छे दिन नेहरू-गांधी-शेख अब्दुल्ला के कारण नहीं आए और आर्य समाजी भी इनका साथ देते रहे।

इन्द्र देव गुलाटी, बुलन्दशहर

कुशलपाल सिंह के पुत्र का निधन

बुलन्दशहर! सावरकरवाद प्रचारसभा के भूतपूर्व अतिरिक्त अध्यक्ष तृतीय, कुशलपाल सिंह के ४४ वर्षीय पुत्र, का निधन हो गया। उन्होंने उसके उपचार में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनका लिवर ठीक कार्य नहीं कर रहा था। उनका इलाज मेधान्ता अस्पताल गुरुगाम में चल रहा था। उनके इलाज में एक करोड़ रुपए व्यय हो गए किन्तु डाक्टर उन्हें सामान्य करने में असफल रहे।

आधुनिक भारतीय इतिहासकारों को भारतीय इतिहास के इस कटु सत्य को स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए कि प्राचीन भारतीय इतिहासकारों (जिनमें पुराणकार प्रमुख हैं—यद्यपि पुराण इतिहास नहीं हैं) ने वर्ण व्यवस्था से प्रभावित होकर इतिहास लेखन किया। प्राचीन भारतीय समाज का विभाजन धर्म के आधार पर मूलतः

हर देश की कोई न कोई विशेषता भारत में विद्यमान रही है। ईश्वर ने भारत को हर सौगात दी है। कोई राष्ट्र अति वर्षा से पीड़ित है तो कोई अति मरुस्थल से, कोई अति शीत से कोई अति ताप से। किसी भी क्षेत्र की बात करिए विश्व का कोई भी देश पूर्ण नहीं है। ईश्वर ने भारत को ही पूर्णता प्रदान की है। एक वाक्य में हम यह कह सकते हैं कि जो भारत में

भर क्षत्रिय की वीर गाथा शामिल नहीं होगी। भर क्षत्रिय सुहेल देव एवं गाजी मियां के बीच हुआ युद्ध एक असाधारण घटना है।

श्रावस्ती सम्राट राष्ट्रवीर सुहेलदेव का जन्म बसन्त पंचमी सन् १००६ ईस्वी को हुआ था।

राज्य पर किसी भारतीय धर्मावलम्बी का राजा बनाया जाना असंभव था। यदि यह माना जाये कि सन् १०२० ईस्वी में सैयद सालार मसूद गाजी के पिता सैयद शाह सालार या उसके मामा सुल्तान महमूद गजनवी ने राजा

अस्मिता का तार-तार किया जाना था। भला कौन राष्ट्रप्रेमी यह सहन करता। सुहेलदेव को भारतीय नरेशों द्वारा की गई भूलों का अहसास था। उन्होंने छोटे बड़े इक्कीस राजाओं (राय रायेत, राय सायेत, अर्जुन, भीखन, कनक,

एक उपेक्षित राष्ट्रमहानायक, श्रावस्ती सम्राट भर क्षत्रिय सुहेलदेव राय

आचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर



नहीं है वह कहीं नहीं है। भारत की समन्वय की, पूर्णता की, यही विशेषता उसके जी का जंजाल भी बनी। विदेशी लुटेरों ने भारत की आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक निधि को लूटने का प्रयास किया और यहां की सभ्यता को पद दलित करने का क्रूर प्रयास किया। मुख्य रूप से इस्लाम धर्मावलम्बी लुटेरों ने अपना उद्देश्य धन लूटना और जेहाद बनाया। जब जिसके मन में आया भारत पर टूट पड़ा। विदेशी लुटेरे, साधारण क्रूर—

दो भागों में किया गया, पहला वैष्णव एवं दूसरा शैव। वैष्णव वर्ग सामन्तशाही का पोषक रहा और शैव समता मूलकसमाज का पक्षधर रहा। विष्णु ने अपने अनुयायियों में वर्ण व्यवस्था को खास तरजीह दी और शिव ने पिछड़े, आदिवासी, अछूत लोगों को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने में यकीन किया। अधिकांश पुराणकार वैष्णव पंथी होने के कारण वैष्णव में से नायकों का चुनाव किया और शैवों को प्रतिद्वन्दी यहां तक कि दैत्य, दानव, राक्षस आदि माना। भारतीय इतिहास की इसी बिडम्बना ने ऐसे महानायकों को अवैष्णव थे को इतिहास में या तो सम्मिलित नहीं किया या फिर उनको उतना महत्व नहीं दिया जितना कि दिया जाना चाहिए था। हर क्षेत्र में ऐसा किया गया, फलतः भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पन्ने दबे रह गए। आज हम अनेको महापुरुषों तथा राष्ट्र की गौरव पूर्ण घटनाओं से अनभिज्ञ हैं। इन सबके लिए कौन उत्तरदायी है? कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है।

दुनिया के ज्ञान-पिपासु हों अथवा दुर्दान्त डाकू-लुटेरे, सभी के लिए भारत भूमि आकर्षण का केन्द्र रही है, इसका मुख्य कारण भारत का सम्पूर्ण विश्व की प्रतिकृति होना है। विश्व के

कबीलों ने भी इसका लाभ उठाया। भारत के शक्ति पुत्रों ने समय समय पर राष्ट्र की अस्मिता बचाने का प्रयास किया। कई इसमें सफल हुए और कई देशी गद्दारों की गद्दारी के कारण असफल भी हुए। सबसे दुखद बात तो यह है कि हमारे ही यहां के कुछ प्रतिष्ठित कहे जाने वाले या समझे जाने वाले कुलीन राजवंशों ने यहां के अकुलीन समझे जाने वाले राजवंशों को मटियामेट करने के लिए विदेशी लुटेरों को शह दी और लाभ उठाया। यह सब कुछ होने के बाद भी भारत की अपनी असाधारण धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्ण बनी रही।

ग्यारहवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में भारत में एक अभूतपूर्व घटना घटी, जिसके महानायक श्रावस्ती सम्राट भर क्षत्रिय वीर सुहेलदेव थे एवं खलनायक था गजनवी से आया क्रूर, पाखण्डी, पामार, हैवानियत की प्रतिकृति, दुर्दान्त लुटेरा सैयद सालार मसूद गाजी। यहां भी सुहेलदेव भर क्षत्रिय को अकुलीन ही माना गया और उनको पराजित कराने के हथकण्डे कथित कुलीनों द्वारा किया गया। किन्तु राष्ट्रवादियों पर लिखा गया कोई इतिहास तब तक पूर्ण नहीं कहलायेगा जब तक कि उसमें राष्ट्रवीर श्रावस्ती सम्राट सुहेल देव

इनके पिता का नाम बिहारीमल था जो कि भारशिव या भर क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे। इनकी माता का नाम जयलक्ष्मी था जो कि चन्देलवंश की थीं। (यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि भर क्षत्रिय वंश में चन्देल वंश की राजकुमारी विवाह गई अब आप स्वयं भर या भारशिव क्षत्रिय वंश की प्रतिष्ठा का अनुमान लगायें।) सुहेलदेव के तीन भाई और एक बहन थी जिनका नाम रुद्रमल, बागमल, सहारमल (भूरायदेव) एवं अम्बे था।

सुहेलदेव की शिक्षा—दीक्षा सुयोग्य गुरुजनों के सानिध्य में सम्पन्न हुई। अपने पिता बिहारीमल एवं राज्य के योग्य युद्धकौशल विज्ञों की देखरेख में सुहेलदेव ने युद्ध कौशल, घुड़सवारी आदि की शिक्षा ग्रहण की। सुहेलदेव की बहुमुखी प्रतिभा एवं लोकप्रियता को देखकर मात्र अठारह वर्ष की आयु में—सन् १०२७ ईस्वी को राजतिलक कर दिया गया और राजकाज में सहयोग के लिए योग्य अमात्य तथा राज्य की सुरक्षा के लिए योग्य सेनापति नियुक्त कर दिये गये।

अनुश्रुति के अनुसार सन् १०२० ईस्वी में श्रावस्ती में सैयद सालार मसूद गाजी ने आक्रमण कर राजा बिहारीमल को मार डाला था, यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता, क्योंकि सन् १०३४ ईस्वी में सैयद सालार मसूद गाजी की आयु मात्र उन्नीस वर्ष थी अतएव १०२० ईस्वी में उसकी आयु (लगभग) मात्र छः वर्ष रही होगी। यदि इसे सच मान भी लिया जाये (यद्यपि इसे किसी हालत में सच नहीं माना जा सकता।) तो सुहेलदेव का राज्याभिषेक सन् १०२७ ईस्वी में न होता। इन सात वर्षों में सैयद सालार मसूद की पकड़ मजबूत हो गई होती। सैयद सालार मसूद गाजी द्वारा विजित

बिहारीमल को मारा था तब भी निश्चित रूप से वहां पर सैयद गाजी का शासन होता, एवं इस्लामी इतिहासकारों द्वारा उक्त बातों का अवश्य उल्लेख किया गया होता किन्तु इस्लामी इतिहासकारों द्वारा ऐसा कुछ कहीं नहीं लिखा गया।

सुहेलदेव भर में राष्ट्रभक्ति का जज्बा कूट-कूट कर भरा था, इसीलिए राष्ट्र में प्रचलित भारतीय धर्म, समाज, सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा को अपना मुख्य कर्तव्य माना। राष्ट्र की अस्मिता से सुहेलदेव ने कभी समझौता नहीं किया। प्रत्येक भारतीय राजा की संप्रभुता का सम्मान करते हुए अपने राज्य विस्तार के लिए किसी भारतीय राजा के राज्य पर आक्रमण नहीं किया। उनके द्वारा विदेशी दुर्दान्त लुटेरे एवं कट्टर इस्लाम प्रचारक—प्रसारक सैयद सालार मसूद गाजी का बध किया जाना एक सच्चे राष्ट्रवादी—भारत प्रेमी होने का अनुपम उदाहरण है। यहां हमें यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि सैयद सालार मसूद गाजी ने भारत देश को लूटने और इस्लाम का प्रचार करने के लिए सभी प्रकार की मानवीय संवेदनाओं को ताक पर रख दिया था और हैवानियत की पराकाष्ठा को भी लांघ दिया था। सिन्ध, मुल्तान, कन्नौज, दिल्ली (दिल्लिका), मेरठ आदि स्थानों में ऐसी तबाही मचाई कि इन्सानियत कांप उठी। सुहेलदेव की राज्य सीमा में भी उसने ऐसा करना चाहा। उसने रामजन्म भूमि को ढहाया और भरराइच में अपने भाई से मिलने आई बहन अम्बे का अपहरण कर लिया। सैयद सालार मसूद की यह सबसे बड़ी भूल थी। रामजन्म भूमि का ढहाया जाना भारतीयों की धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात था और अम्बे का अपहरण भारतीय

कल्याण, नगरून, मगरू, कर्णदेव, बीरबल, अजयपाल, श्रीपाल, हरपाल, हरखू, नरखू, देव नारायण, वीरसिंह, राय भरदेव, बहरमल, मल्हाराय, सेमावत) को पत्र लिखा कि यदि हम सब एकजुट होकर गाजी का सामना नहीं करेंगे तो परिणाम अच्छे नहीं होंगे। नरेशों ने उनके पत्र की गंभीरता को समझा और अपनी अपनी सेना सहित सुहेलदेव का साथ दिया। कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के बाद यह दूसरा युद्ध था जब इस प्रकार नरेश और उनकी सेनाएं एकत्र हुईं। सभी राजाओं ने सुहेलदेव को समेकित सेना का सेनापति स्वीकार किया। गाजी भी अपनी सेना के साथ युद्ध क्षेत्र में उतरा। वह सुहेलदेव द्वारा घेर लिया गया। ईरान से उसके पिता सैयद शाह सालार मसूद एवं गुरु सैयद मीर इब्राहिम उसे बचाने के लिए भारत दौड़े आये किन्तु वे गाजी को नहीं बचा पाये। सैयद सालार मसूद गाजी अपने कु-कर्मों के कारण श्रावस्ती सम्राट सुहेलदेव भर के हाथों मारा गया। भारतीय इतिहास में भरराइच के महासमर को दूसरा कुरुक्षेत्र की संज्ञा दी जाती है—इससे भर-राइच महासमर में हुई विनाश लीला का अन्दाजा लगाया जा सकता है। सुहेलदेव भर की इस विजय को धर्म की विजय कहा जा सकता है। मिर-अत-ई-मसूदी के लेखक मुस्लिम इतिहासकार शेख अब्दुर रहमान चिश्ती ने लिखा है कि—इस युद्ध में दो खादिमों (सेवकों) को छोड़ सभी मारे गये। गजनवी-ईरान के हर घर का कोई न कोई अवश्य मरा था। भारतीय इतिहास के दूसरे कुरुक्षेत्र को इतिहासकारों ने मात्र एक दो पंक्तियों में उल्लेख कर अपने कर्तव्य की इति श्री की, ऐसा क्यों? इसका मूल कारण इस महासमर का

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,

माननीय प्रधानमंत्री,

भारत सरकार।

साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय :- देश में नशबंदी अभियान चलाने की मांग।

महोदय,

आपको पूर्णतः ज्ञात है कि बहुविवाह, तीन तलाक, हलाला आदि कुप्रथाओं के कारण मुस्लिमों की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। जनसंख्या विस्फोट का दबाव तेजी से देश के संसाधनों पर पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप देश का विकास जिस गति से होनी चाहिए, उस गति से नहीं हो रही है। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इस ओर केन्द्र की किसी भी सरकार का ध्यान अब तक नहीं गया है। जब तक देश में जनसंख्या विस्फोट को नहीं रोका गया, तब तक देश न तो विकास तेजी से होगा, न आतंकवाद समाप्त होगा और न ही कानून-व्यवस्था सुदृढ़ होगी। अतः आपसे मांग है कि जनसंख्या विस्फोट को रोकने तथा भारत की समृद्धि के लिये निम्न निर्णय तुरंत लेने की कृपा करें:-

1. देश में नोटबंदी की तरह ही नशबंदी अभियान तेजी से चलाया जाये।
2. देश में दो बच्चे व एक विवाह का कानून शीघ्र लागू करें।
3. दो बच्चे के निर्णय को नहीं मानने वाले का मताधिकार समाप्त किया जाये तथा उसे सभी प्रकार की सरकारी सहायता व संरक्षण से वंचित किया जाये।
4. देश में समान नागरिक कानून शीघ्र बनाया जाये।
5. मुस्लिम समाज की कुप्रथा बहुविवाह, तीन तलाक व हलाला पर तुरंत रोक लगाया जाये।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्षमुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिववीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 7 का पाकिस्तान को तो मिटाना....

उसके मुँह पर भिनभिनाती मक्खियों को पंखे से उड़ाती उसकी बहन फातिमा जिन्ना बिसूरती ही रही। पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री नवाबजादा लियाकत अली खॉं को भरी सभा में गोली मार दी गई और कुछ नहीं हुआ। उसकी बेगम को राजदूत बनाकर पाकिस्तान से बाहर भेज दिया गया—न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। फातिमा जिन्ना अपने बंगले में चाकुओं से गोदकर मरी पाई गई; क्योंकि उसने तानाशाह मोहम्मद अयूब के विरुद्ध राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने की गलती की थी। बंगाल का कातिल हसन शहीद सुहरावर्दी बेरुत के एक होटल में संदिग्ध स्थिति में मरा पाया गया और उसके चेला शेख मुजीबुर्रहमान को बांग्लादेश का प्रथम राष्ट्रपति रहते अपने घर में सपरिवार मार डाला गया। उसकी दोनों बेटियाँ लंदन में होने के कारण बच गईं, जिनमें से बड़ी शेख हसीना वाजेद आज बांग्लादेश की प्रधानमंत्री है। नेहरू जी पक्षाघात से अपाहि्त होकर बड़ी दयनीय स्थिति में मरे और लुई माउंटबैटन को आयरलैंड के उत्तरी भाग बेलफास्ट (अंग्रेजों के अधीन) की एक झील में सैर करते अपने नाती के साथ आयरिश क्रान्तिकारियों द्वारा बम से चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिया गया। बच्चे 'पूज्य बापू' गाँधी जी, तो उनकी अप्रत्याशित मृत्यु इस सनातन हिन्दू राष्ट्र के लिए कितनी दुःखद व दुर्भाग्यपूर्ण थी, यह सर्वविदित है।

शेष पृष्ठ 5 का श्रीमद् भगवत गीता का.....

जीवात्मा का वर्णन है, जीव, ब्रह्म और प्रकृति सदैव रहते हैं।

अध्याय १६ गीता का सार

अहिंसां सत्यम क्रोधस्त्यागः शान्तिरपैभुनम

दया भूतेश्व लोलुपटं मार्दवं हीश्चापलम॥२॥

अहिंसा सत्य भाषण, क्रोध न करना, संसार की कामनाओं का त्याग अन्तःकरण में राग द्वेष जनित हलचल न होना, चुगली न करना, सांसारिक विषयों में न ललचाना, अन्तःकरण की कोमलता अकृतव्य करने में न लज्जा चपलता का अभाव। इस अध्याय में दोनों सम्पत्तियों का वर्णन है देवी सम्पत्ति व आसुरी सम्पत्ति का। जो साधक इन दोनों विभागों को ठीक रीति से जान लेता है, वह आसुरी का त्याग कर देता है, और देवी शक्ति स्वयं प्रकट हो जाती है और देवी शक्ति के प्रकट होते ही एकमात्र परमात्मा में संबंध रह जाता है।

अध्याय १७ गीता का सार

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।

सात्विकी राजसि चैव तामसी चैति तां शृणु॥२॥

मनुष्य को स्वभाव से उत्पन्न हुई श्रद्धा, सात्विकी तथा राजसि और तामसी ऐसे तीन तरह की होती है। उसको जानो सात्विक, राजसिक, तामसिक। जो अपना कल्याण चाहते हैं उनकी श्रद्धा सात्विक जो मरने के बाद स्वर्ग चाहते हैं वह राजसिक और जो मनुष्य केवल खाने पीने में और ऐश आराम में रहते हैं वह तामसिक होते हैं। जिनकी श्रद्धा ईश्वर पर होती है और अनुरूप चलते हैं उनकी प्रवृत्ति सात्विक होकर प्रधान हो जाती है।

अध्याय १८ गीता का सार

शमो दमस्तपः मोचं क्षान्तिरा जीव मेव च।

ज्ञानं विज्ञानं मास्तिक्यं ब्रह्मं कर्म स्वभावजम॥४२॥

मन का निग्रह करना इन्द्रियों को वश में करना धर्म पालन के लिए कष्ट सहना, बाहर भीतर से शुद्ध रहना, दूसरों के अपराध क्षमा करना, शरीर मन आदि में सरलता रखना, वेद शास्त्र आदि का ज्ञान होना। यज्ञ विधि को अनुभव में लाना और परमात्मा व वेद आदि में आस्तिक भाव रखना। यह सबके सब ब्राह्मण के लक्षण हैं व कर्म हैं। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा संन्यास किसे कहते हैं। श्रीकृष्ण ने कहा संन्यास का वास्तविक अर्थ इन्द्रिय निग्रह मोह से अनाशक्ति सत्य से प्रेम कर्म बन्धन से परिचित होना। प्रत्येक कर्म, व्यवहार, धर्म, अधर्म और आध्यात्म मार्ग का तथा सृष्टिकर्म का वास्तविक स्वरूप समझ कर व्यवहार में लाना ही संन्यास कहलाता है।



75 कोल (अलीगढ़)

विधानसभा क्षेत्र से अखिल
भारत हिन्दू महासभा के
प्रत्याशी

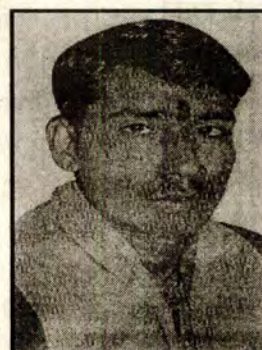
चुनाव चिन्ह



नारियल

अशोक कुमार पांडेय

को नारियल बटन दबाकर
भारी मतों से सफल बनायें



चुनाव चिन्ह



नारियल

15 खतौली विधानसभा
क्षेत्र से अखिल भारत हिन्दू
महासभा के युवा प्रत्याशी

सुरेन्द्र कश्यप

को नारियल बटन दबाकर
भारी मतों से सफल बनायें



चुनाव चिन्ह



नारियल

अखिल भारत हिन्दू
महासभा के मुजफ्फरनगर
विधानसभा सीट की
प्रत्याशी

रिनू उर्फ (साक्षी)

को नारियल बटन दबाकर भारी
मतों से सफल बनायें

शेष पृष्ठ 1 का ट्रंप ने दिया भारत को....

२०१७, नाम से यह विधेयक पेश किया। इसमें उन कंपनियों को वीजा देने में प्राथमिकता देने का प्रस्ताव है जो बाजार औसत का दो गुना वेतन देने को तैयार हों। इसमें न्यूनतम भुगतान की श्रेणी को खत्म करने और एच १बी वीजा पर आने वालों के लिए वेतन का स्तर बढ़ाने का प्रावधान है। इसमें एच१बी वीजा का इस्तेमाल करने वाली कंपनियों के लिए स्थानीय नौकरी का प्रतिस्थापन नहीं होने के प्रमाण पत्र से छूट के लिए शर्त है कि ऐसे वीजा पर बुलाए जाने वाले कर्मचारी को १३०००० डॉलर से अधिक के वेतन पर नहीं बुलाया जाएगा। यह १६८६ में स्थापित एच१बी वीजा के तहत वर्तमान न्यूनतम वेतन ६०,००० डॉलर के वेतन स्तर के दुगुने से भी ज्यादा है। लोफग्रेन ने कहा मेरा विधेयक एच १बी वीजा की दुनियाभर से सर्वश्रेष्ठ और उदीयमान को चुनने की मूल मंशा पर फिर से ध्यान केंद्रित करता है। साथ ही अमेरिका के कार्यबल में उच्च दक्षता, योग्यता, उच्च वेतनमान और उच्च कुशलता से परिपूर्ण कर्मचारियों को जोड़ें जो अमेरिका में नौकरियां पैदा करने में मदद करें ना कि उन्हें नौकरियों से विस्थापित करें। लोफग्रेन ने कहा यह एक बाजार आधारित समाधान देगा जिसमें उन कंपनियों को प्राथमिकता दी जाएगी जो ज्यादा वेतन देने को तैयार होंगी। इससे अमेरिकी नियोजकों की योग्य लोगों तक पहुंच सुनिश्चित होगी। इससे स्थानीय कंपनियों को कर्मचारियों को बहार से मंगवाने और अमेरिका में वेतन को रखने के प्रोत्साहन को समाप्त किया जा सकेगा। इस आदेश का लक्ष्य रोजगार वीजा के नियमों को कड़ा बनाना है और यह अमेरिकी नयी सरकार के आव्रजन व्यवस्था में सुधार की व्यापक योजना का हिस्सा है। माना जा रहा है कि ट्रंप सरकार के इस कदम से न केवल एच १बी और एल१बी वीजा पर शिकंजा कसेगा बल्कि इससे इंसपेक्टर राज को बढ़ावा मिलेगा। इससे संबंधित राष्ट्रपति के कार्यकारी आदेश के मसौदे के अनुसार नयी व्यवस्था में एच १बी वीजा पर आने वाले व्यक्तियों के जीवनसाथी के लिए अमेरिका में काम करने की अनुमति भी खत्म हो जाएगी। जीवनसाथी को काम करने का अधिकार देने वाले वीजा की शुरुआत बराक ओबामा की सरकार ने हाल ही में ही की थी। व्हाइट हाउस के प्रेस सचिव सीन स्पाइसर ने अपनी दैनिक प्रेसवार्ता में कहा मेरे हिसाब से जहां तक एच१बी और अन्य वीजा की बात है यह व्यापक आव्रजन सुधारों का हिस्सा है। राष्ट्रपति अपने कार्यकारी आदेशों के माध्यम और कांग्रेस के साथ काम करते हुए इनके बारे में बात करना जारी रखेंगे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने अमेरिकी राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड ट्रंप को पत्र लिखकर मांग की है कि चुनाव से पूर्व भारतीयों से किये वादों को पूरा करें। उन्हें याद रखना चाहिए कि भारतीयों ने किस प्रकार से ट्रंप का समर्थन किया था।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का एक उपेक्षित राष्ट्रमहानायक, श्रावस्ती.....

अति राष्ट्रवादी एवं कट्टर इस्लामवाद के विरुद्ध लड़ा जाने वाला युद्ध होना है। जिस तरह से भारतीय धर्मों की रक्षा करने एवं कट्टर इस्लामवाद का प्रसार रोकने के लिए सुहेलदेव भर ने युद्ध किया उसका वर्णन करने से शायद इतिहासकार कट्टर इस्लामियों के कोपभाजन हो सकते थे। इस्लामिक आतंकवाद जैसा आज हम देख रहे हैं उस जमाने में इसका रूप और भी विकृत रूप था। इतिहासकारों एवं तत्कालीन राजवंशों ने सुहेलदेव एवं भर कौम को भुला देने में ही अपनी भलाई समझी। इतिहास साक्षी है कि सैकड़ों साल बाद भी मुस्लिम शासकों ने महाराजा सुहेलदेव के वंशजों (उत्तराधिकारियों) एवं भर जाति को ढूंढ ढूंढ कर कत्ल करवाया। इसके लिए यहां के स्वार्थी गद्दार राज वंशों ने भी मुस्लिम शासकों का साथ दिया और इनाम पाये।

उस समय के कवियों को इस राष्ट्र महानायक को लेकर जिस राष्ट्रवादी साहित्य का सृजन करना था वह नहीं किया गया। जिस राष्ट्रवादी युद्ध के भय ने लगभग दो सौ वर्षों तक विदेशी आक्रमणकारियों—लुटेरों को भारत की ओर नजर उठाकर देखने का साहस नहीं होने दिया यदि उस राष्ट्रवादी युद्ध की गाथा को कवियों ने जनमानस तक पहुंचाया होता तो यहां के हर घर के बच्चे के खून में इतना उबाल आ चुका होता कि इतिहास में गुलाम वंश, मुगल वंश, आदि का उल्लेख करने का अवसर ही न मिलता और भारत मजहबी मार काट का अखाड़ा न बन पाता। आज के वैज्ञानिक युग में जबकि मनुष्य चन्द्रमा पर जा पहुँचा है, इस्लामिक कट्टरवाद इस्लाम के प्रचार के लिए प्रेम के बल पर नहीं अपितु खून—खराबे एवं आतंक के सहारे इस्लाम के प्रचार प्रसार में विश्वास रखता है। यद्यपि यह बात हर इस्लामिक व्यक्ति पर लागू नहीं होती किन्तु कुछ सिरफिरे जो इस्लाम को समझते ही नहीं हैं निरीह प्राणियों का कत्लेआम करते हैं। जब हम मनुष्यों को ही जीने नहीं देते तब हम कहाँ के धार्मिक हैं? उस अदृश्य के नाम पर दृश्य जगत के दृश्य प्राणियों का खून बहाना महान मूर्खता ही कही जायेगी। धर्म क्या है यहाँ चर्चा करना उचित नहीं है। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि जब किसी धर्म विशेष का व्यक्ति यह कहता है कि ईश्वर ने ऐसा कहा है तब आप यह समझ लीजिए कि वह उतना ही झूठ बोल रहा है—क्योंकि ईश्वर ने कभी भी किसी को भी वर्ग विशेष के पोषण के लिए न तो कुछ कहा और न लिखा, जो कुछ भी कहा या लिखा गया है—हमारे ही बीच के व्यक्तियों ने कहा या लिखा है। जो लोग किसी भी बात को जबरन ईश्वर पर थोपते हैं वह ईश्वर की सत्ता को सीमित ही करते हैं। ईश्वर की किसी भी कृति में आलोचना की गुंजाइश नहीं होती जबकि हमारे धर्म ग्रन्थ, सिद्धान्त आदि आलोचना से परे नहीं हैं। हम अपने अपने समुदायों के ग्रन्थों, सिद्धान्तों को ईश्वरीय सिद्ध करने के लिए रात दिन एक कर रहे हैं एवं दूसरों को बाध्य करने में लगे हैं कि उनके समुदाय के पास जो है वही सत्य है—पर ऐसा है नहीं। धर्म के विषय में आज भी यह कहानी प्रासंगिक है—“पाँच अन्धे थे। उनके सामने हाथी खड़ा था। उनमें जानना चाहा कि हाथी कैसा होता है। वे हाथी को टटोलने लगे। पहले अन्धे ने हाथी का पैर टटोला और कहा कि हाथी खम्भे के समान होता है। दूसरे अन्धे ने कान स्पर्श किया और कहा कि हाथी सूप के समान होता है। तीसरे अन्धे ने हाथी की पूँछ को टटोला और कहा कि हाथी पतली रस्सी के समान होता है। चौथे अन्धे ने हाथी की सूँड़ को टटोलते हुए कहा कि हाथी का आकार लम्बे अजगर के समान होता है। और पाँचवें अन्धे ने हाथी के दाँत का स्पर्श किया और कहा कि हाथी का आकार डण्डे के समान होता है। धर्म के मामले में हम लोगों की स्थिति इन पाँचों अन्धों के समान ही है। हाथी रूपी धर्म को समझने के लिए यह आवश्यक है कि जिस अन्धे ने जो कुछ जाना उसका समन्वय करे और उसे एक रूप दे। खेद की बात है कि जो धारण करने योग्य है उसे हम धारण नहीं करते और धारण न करने योग्य को धारण करते हैं।”

शेष पृष्ठ 1 का भ्रष्टाचार के मामले में भारत.....

राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने की मांग की है। उन्होंने प्रधानमंत्री से कहा है कि बिना भ्रष्टाचार समाप्त किये भारत का पूर्ण विकास नहीं हो सकता है।

शेष पृष्ठ 4 का व्यवहार और पर्यावरण....

आरलैंड की दुर्घटना के कारण रेडियोधर्मी पदार्थों का उत्सर्जन हुआ। जिससे उसके आसपास रहने वालों की मानसिक तथा संवेगक क्षति का अनुभव किया। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मानव व्यवहार पर पड़ने वाले पर्यावरण के ऋणात्मक एवं सकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं विशेषकर पर्यावरण का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। जो हमारे जीवन के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक और पुष्टिकर होता है। इसलिए हमें सकारात्मक पर्यावरणीय गुणवत्ता बनाए रखने का सदैव प्रयास करना चाहिए। मानव होने के नाते हमें सदैव निर्माणकारी तत्त्वों की ओर अधिक ध्यान देना होगा तभी हम सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की परिकल्पना साकार कर सकते हैं।

दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
विजया एकादशी	21 फरवरी	बुधवार
प्रदोष व्रत	24 फरवरी	शुक्रवार
वीर सावरकर पुण्य तिथि, अमावस्या	26 फरवरी	रविवार
चन्द्रशेखर आजाद बलिदान दिवस	27 फरवरी	मंगलवार

यह भी सच है

सफल अभियान का असफल प्रदर्शन

आज युद्ध जैसी स्थिति में राष्ट्रहित के प्रति कुछ आवश्यक निर्णय सरकार को लेने होंगे। देश का वातावरण बनाने में टीवी चैनल अत्यधिक प्रभावशाली हो गए हैं। देश के कौने कौने में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की गूँज पहुँच गयी है। लेकिन सरकार के नियंत्रण में न होने से बहुत कुछ नकारात्मक संदेशों का निर्बाध गति से प्रसारण होता आ रहा है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए 84 वर्षों बाद 25-26 सितंबर की रात एलओसी पार करके पीओके में जाकर सेनाओं के पराक्रमी प्रदर्शन पर टीवी चैनलों ने अभी तक बड़ी बड़ी बहस चला रखी है। इतने बड़े सफल अभियान को ही कटघरे में खड़ा करने की होड़ हो रही है। राजनैतिक कीड़ों ने राष्ट्रीय सुरक्षा को ही राजनीति का नया अखाड़ा बनाने में भी कोई संयम नहीं बरता। इसमें कोई सार्थकता नहीं और न ही कोई ज्ञानवर्धक व विचारणीय बिंदु है जो समाज को प्रेरित करता। बल्कि समाज दिग्भ्रमित होकर राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रति उदासीन हो रहा है। कई वर्षों से टीवी न्यूज चैनलों पर पाकिस्तान के नेता, सेनाधिकारी व पत्रकार आदि हमारे व हमारे ही देश के विरुद्ध जहरीली भाषा बोलते रहे और हम चुप सुनते रहे, किसी को भी क्रोध नहीं आता क्यों? क्या हम सबका स्वाभिमान मिट चुका है जो हम शत्रु के विष वमन पर भी सहिष्णु हो जाते हैं? हमारी नौजवान व युवा पीढ़ी इस प्रकार की नकारात्मक व तथ्यहीन वार्तालापों से क्या निष्कर्ष निकालेगी? क्या उनके कोमल हृदयों पर इनसे कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा? यह कहना भी उचित है कि आज की परिस्थिति में देश की सुरक्षा व सेनाओं पर हो रही लंबी लंबी चर्चाएँ किसी न किसी रूप में देश के शत्रुओं को ही लाभ पहुँचा रही है। लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है पर जब प्रश्न राष्ट्रहित का हो तो कुछ कठिन मार्ग अपनाने आवश्यक होते हैं। अतः सरकार को अविलंब प्रसारण माध्यमों पर राष्ट्र रक्षा सम्बंधित गोपनीय विषयों पर प्रतिबंध लगाना चाहिये।

राष्ट्रघात का सजग प्रहरी सुदर्शन

सत्य सनातन वैदिक हिन्दू धर्म की पवित्र भूमि भारत वर्ष में आक्रान्ताओं के वंशजों को संतुष्ट करने के लिये सुदर्शन न्यूज चैनल के स्वामी श्री सुरेश के. चौहान के विरुद्ध षडयंत्र रचा जा रहा है। यह मत भूलो कि अनेक वर्षों से सुरेश जी अपने सुदर्शन के माध्यम से राष्ट्र व धर्म की रक्षार्थ चुन-चुन कर देशद्रोहियों का निडरता से पर्दाफाश कर रहे हैं। मुख्य रूप से कोई भी राष्ट्रघाती बिंदू उनकी दृष्टि से ओझल नहीं होता। उसमें चाहे ओबेसी का अत्यंत विवादस्पद जहरीला भाषण हो, इस्लामिक जिहाद का मास्टर माइंड जाकिर नाईक हो या फिर हिन्दू युवतियों को लव जिहाद में फसाने जैसे अन्य षडयंत्र ही क्यों न हो? यहां तक की मुस्लिम महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के लिए भी तीन तलाक व बहु विवाह जैसी कुरीति समाप्त करने एवं जनसँख्या नियंत्रण के लिए एक सामान नागरिक कानून बनाने के पक्ष में वातावरण बना रहे हैं। विभिन्न टीवी चैनल अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए अनेक हथकंडे अपनाते हैं और उन पर विदेशियों व षडयंत्रकारियों की विशेष कृपा है। ये चैनल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर देश में निरन्तर नकारात्मक वातावरण बनाते हैं पर सरकार का इन पर कोई नियंत्रण न होने से इनका दुःसाहस बढ़ रहा है। ऐसे अंतरराष्ट्रीय व दूषित वातावरण में संभवतः सुदर्शन ही एकमात्र ऐसा टीवी चैनल है जो राष्ट्रीयता व राष्ट्रवाद को सतत प्रोत्साहित करके सामान्य नागरिकों में राष्ट्रभक्ति का भाव बनाने में सफल है। अतः सभी राष्ट्रवादियों को इस संकट की घड़ी में सुदर्शन टीवी न्यूज चैनल के स्वामी श्री सुरेश के. चौहान जी का मनोबल व उत्साह बनाये रखना होगा। उनके ऊपर आने वाली किसी भी आपत्ति का निवारण प्राथमिकता से करना होगा। अतः सभी राष्ट्रवादियों को इस संकट की घड़ी में सुदर्शन टीवी न्यूज चैनल के स्वामी श्री सुरेश के. चौहान जी का मनोबल व उत्साह बनाये रखना होगा। उनके ऊपर आने वाली किसी भी आपत्ति का निवारण प्राथमिकता से करना होगा।

राजनीति या चालबाजी

पिछले कुछ दिनों से जेएनयू (दिल्ली) के एक छात्र नजीब अहमद के लापता होने को विपक्षी दलों ने नकारात्मक राजनीति का पुनः ऐसा अखाड़ा बना लिया, जिसमें दंगल की कोई संभावना भी नहीं बन रही है। विडम्बना यह है कि दूषित मानसिकता से ग्रस्त राजनीति के इन खिलाड़ियों में देश में लापता होने वाले हजारों बच्चों के प्रति कोई संवेदना नहीं जागती? जबकि पिछले अनेक वर्षों से समाचार पत्रों में नित्य छपने वाले विज्ञापनों से यह ज्ञात होता है कि केवल दिल्ली में ही लगभग 2-5 मासूम बच्चे प्रायः प्रतिदिन लापता होते रहते हैं या उनका षडयंत्रकारियों द्वारा अपहरण होता है। जिनमें अधिकांशतः कम आयु की हिन्दू बालिकाएँ होती हैं। ऐसे गंभीर अपराधों पर आज तक कोई नेता नहीं बोला क्यों? क्योंकि इनमें प्रायः हिन्दू ही पीड़ित होते हैं। जबकि इन वोट के भूखे नेताओं को मुसलमानों के वोट चाहिए तभी तो ये उनसे सम्बंधित महत्वहीन विवादों पर भी सक्रिय हो जाते हैं। क्या इस प्रकार ये सस्ती व घटिया राजनीति करने वाले चालबाज राष्ट्र निर्माण में निरंतर बाधाएँ डाल कर देशद्रोही षडयंत्रकारियों को प्रोत्साहित नहीं कर रहे हैं? लोकतान्त्रिक व्यवस्था में बहुसंख्यकों का उत्पीड़न हो और अल्पसंख्यकों का पोषण होता रहे, तो क्या यह देश के लिए स्वास्थ्यवर्धक होगा? यह समझना कठिन है कि देश की जनता ऐसे चालबाजों को क्यों सहन कर रही है? ऐसा प्रतीत होता है कि स्वार्थी प्रवृत्ति ही राष्ट्रहित की अवहेलना का मुख्य कारण है।

विनोद कुमार सर्वोदय

कबिरा खड़ा बजार में

फिर उल्लू बनाने निकले नेता जी



भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और चुनाव किसी भी लोकतंत्र का महापर्व होते हैं ऐसा कहा जाता है। पता नहीं यह गर्व का विषय है या फिर चिंता का। हमारे देश में इन महापर्वों का आयोजन लगा ही रहता है। कभी लोकसभा कभी विधानसभा तो कभी नगरपालिका के चुनाव। लेकिन अफसोस की बात है कि चुनाव अब नेताओं के लिए व्यापार बनते जा रहे हैं। और राजनैतिक दलों के चुनावी मैनाफेस्टो व्यापारियों द्वारा अपने व्यापार के प्रमोशन के लिए बाँटे जाने वाला लोलीपाप मात्र है। जिसे दिखाकर वो भोली भाली जनता को एक बार फिर उल्लू बनाने निकलते हैं। राजनैतिक दलों की निर्लज्जता और इस देश के वोटर की बेबसी दोनों ही दुखदायी हैं। क्यों कोई इन नेताओं से नहीं पूछता कि इन पांच सालों या फिर स्वतंत्रता के बाद इतने सालों के शासन में तुमने क्या किया। उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी हो या पंजाब का भाजपा अकाली दल गठबंधन दोनों को सत्ता में वापस आने के लिए या फिर अन्य पार्टियों को राज्य के लोगों को आज इस प्रकार के प्रलोभन क्यों देने पड़ रहे हैं। सवाल तो बहुत हैं पर शायद जवाब किसी के पास भी नहीं। जब हमारा देश आजाद हुआ था तब भारत पर कोई कर्ज नहीं था तो आज इस देश के हर नागरिक पर औसतन 84000 से ज्यादा का कर्ज क्यों है, जब अंग्रेज हम पर शासन करते थे तो भारतीय रुपया डालर के बराबर था तो आज वह 62.00 रुपए के स्तर पर कैसे आ गया। हमारा देश कृषि प्रधान देश है तो स्वतंत्रता के इतने सालों बाद भी आज तक किसानों को 28 घंटे बिजली एक चुनावी वादा भर क्यों है। चुनाव दर चुनाव पार्टी दर पार्टी वही वादे क्यों दोहरा, जाते हैं क्यों आज 70 सालों बाद भी पीने का स्वच्छ पानी, गरीबी और बेरोजगारी जैसे बुनियादी जरूरतें ही मैनिफेस्टो का हिस्सा हैं। और क्यों हमारी पार्टियाँ रोजगार के अवसर पैदा करके हमारे युवाओं को स्वावलंबी बनाने से अधिक मृत चीजों के प्रलोभन देने में विश्वास करती हैं। यह वाकई मैं एक गंभीर मसला है कि जो वादे राजनैतिक पार्टियाँ अपने मैनिफेस्टो में करती हैं। चुनाव जीतने के बाद ये पार्टियाँ अपने मैनिफेस्टो को लागू करने के प्रति कभी भी गंभीर नहीं होती और यदि उनसे उनके मैनिफेस्टो में किए गए वादों के बारे में पूछा जाता है तो सत्ता के नशे में अपने ही वादों को चुनावी जुमले कह देती हैं। इस सब में समझने वाली बात यह है कि वे अपने मैनिफेस्टो को नहीं बल्कि अपने वोटर को हल्के में लेती हैं। आम आदमी तो लाचार है चुने तो चुने किसे आखिर में सभी तो एक से हैं। उसने तो अलग अलग पार्टी को चुन कर भी देख लिया लेकिन सरकारें भले ही बदल गईं मुद्दे वही रहे। पार्टी और नेता दोनों ही लगातार तरक्की करते गए लेकिन वो सालों से वहीं के वहीं खड़ा है। चुनाव आयोग द्वारा चुनाव से पहले आचार संहिता लागू कर दी जाती है। चुनाव आयोग यह सुनिश्चित करे कि पार्टियाँ अपने चुनावी मैनिफेस्टो को पूरा करें और जो पार्टी सत्ता में आने के बावजूद अपने चुनावी मैनिफेस्टो को पूरा नहीं कर पाए वह अगली बार चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित कर दी जाए। जब तक इन राजनैतिक दलों की जवाबदेही अपने खुद के मैनिफेस्टो के प्रति तय नहीं की जाएगी हमारे नेता भारतीय राजनीति को किस स्तर तक ले जाएंगे इसकी कल्पना की जा सकती है। इसलिए चुनावी आचार संहिता में आज के परिप्रेक्ष्य में कुछ नए कानून जोड़ना अनिवार्य सा दिख रहा है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

